: द्‌वितीय अध्याय :

रांगेय राघव के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन

: द्वितीय अध्याय :

'रांगेय राघव के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन'

2.1 आलोच्य उपन्यासों का तात्विक विवेचन

2.1.1 कथानक

2.1.2 पात्र तथा चरित्र-चित्रण

2.1.3 संवाद तथा कथोपकथन

2.1.4 देशकाल वातावरण

2.1.5 भाषा शैली

2.1.6 उद्देश्य

निष्कर्ष

प्रेमचंदोत्तर हिंदी साहित्य के प्रगतिवादी साहित्यकारों में 'रांगेय राघव जी का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में काव्य, कहानी, नाटक, आलोचना आदि के साथ उनतालीस उपन्यास लिखकर हिंदी उपन्यास साहित्य में अपनी अनोखी पहचान रखी है। उनके अधिकतर उपन्यास सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। अपने उपन्यासों में उन्होंने समाज का कोना-कोना झाँककर उसका यथार्थ चित्रण किया है। समाज का ऐसा एक भी अंग नहीं रहा होगा जिस पर उन्होंने अपनी लेखनी न चलायी हो । उन्होंने सामाजिक जीवन के यथार्थ को अपना लक्ष्य बनाकर उपन्यासों की रचना की है । साथ ही समाज में स्थित मनुष्य-जीवन की कठिनाइयाँ, उलझनों, सुख के अभावों और इन सबके विरोध में किया हुआ संघर्ष आदि के साथ जुड़ी हुई रुढ़ि-परंपरा, समाज का विकास तथा -हास, सामाजिक सुसंस्कृति तथा कुरीतियों आदि घटनाओं के साथ तत्कालीन समाज का यथार्थ वर्णन किया है। और समाज के सामने अपनी कृतियों के माध्यम से कुछ-न-कुछ आदर्श रखना चाहते हैं। इस संबंध में राघव जी का कथन है, "मेरे सामने इतिहास है, जीवन है, मनुष्य की पीड़ा है और है वह मनुष्य की चेतना जो निरंतर अंधकार से लड़ रही है और इससे बढ़कर अभी तक कोई सत्य मेरे सामने नहीं आया है।"[1]

राघव जी ने अपने साहित्यिक जीवन में विविध प्रकार के उपन्यास लिखें हैं जैसे - सामाजिक, आंचलिक, समाजवादी, ऐतिहासिक, जीवनचरितात्मक आदि। उनके उपन्यास साहित्य के संबंध में डॉ.(श्रीमती) उमा त्रिपाठी जी ने लिखा है -

"रांगेय राघव जी के उपन्यास मानव जीवन के समानांतर चलते है।जीवन की जिस समस्या को प्रधान रुप से अपनाया जाता है, वह उपन्यास उसी के अनुरुप ढल जाता है। इसलिए उनके उपन्यासों में शिल्पगत लचीलापन देखने को

मिलता है। इसी कारण साहित्य की अन्य सहयोगी विधाओं को भी अपनाया है, यथा नाटकीयता, ऐतिहासिकता, जीवनपरकता, विवेचनात्मकता ।.... आवश्यकता नुसार उन्होंने प्रतीकात्मकता, मनोवैज्ञानिकता, आंचलिकता, वर्णनात्मकता और नाटकीयता को भी अपनाया है।"[2]

अतः मेरा शोध कार्य डॉ.रांगेय राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर' और 'कल्पना' इन उपन्यासों तक ही सीमित होने के कारण आलोच्य उपन्यासों का ही तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया है।

2.1 आलोच्य उपन्यासों का तात्विक विवेचन :-

2.1 कथानक :-

'कथानक' को उपन्यास का प्रधान तत्त्व माना जाता है। कथानक से ही उपन्यास का विकास होता है । डॉ.प्रताप नारायण टंडन जी ने लिखा है, "कथानक उपन्यास का मूल तत्त्व है, जिसका महत्त्व उसके अन्य तत्वों से अधिक है। कथानक ही वह वस्तु होती है। जिस पर उपन्यास का भवन खड़ा होता है । इसीलिए इसे उपन्यास का ढाँचा माना जाता है।"[3]

अतः कथानक को उपन्यास का प्राण तत्त्व माना जाता है। संबद्धता, मौलिकता, निर्माण कौशल, सत्यता, रोचकता आदि कथानक के गुण माने जाते हैं। साथ ही मानवी जीवन की समस्याओं की व्याख्या करना, जीवन पक्षों के महत्त्व का मूल्यांकन, अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति आदि कथानक की विशेषताएँ मानी जाती है। इस दृष्टि से बना हुआ कथानक अव्वल दर्जे का तथा उत्कृष्ठ माना जाता है।

राघव जी ने 'राई और पर्वत', 'पतझर' और 'कल्पना' उपन्यासों के

कथानक में विविधता एवं व्यापकता दोनों को समान रुप से स्थान दिया है। उन्होंने भारतीय आधुनिक युग के शहरी तथा ग्रामीण जीवन-कथाओं के साथ-साथ ऐतिहासिक तथा पौराणिक कथाओं के आधार पर जीवन की सत्यता को अपने अनुभव और कल्पना की सहायता से प्रस्तुत किया है । उन्होंने अपनी कथाओं में मनुष्य के वर्तमान जीवन की आशा-आकांक्षा, घुटन एवं कुंठा, निराशा, सुख-दुख, विद्रोह, द्वेष, मत्सर आदि मानवी मन की प्रवृत्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण कर उनका चित्रण किया है। साथ ही युगों-युगों से प्रचलित मानवी पीड़ा, संघर्ष, समाज द्वारा मनुष्य की विडंबना एवं प्रताड़ना, सामाजिक विकास तथा -हास आदि को यथार्थ के सहारे प्रस्तुत किया है।

उनके उपन्यासों के कथानक आरंभ से अंत तक एक ही प्रवाह में बहने के कारण बीच में कहीं भी रुकावट नहीं आई है। राघव जी ने कभी वातावरण चित्रण से तो कभी कथोपकथन से कथानक का प्रारंभ किया है। कथानक को पढ़ते समय पाठक यह अनुभव करता है कि, वह कथानक में घटित घटनाओं से पूर्व परिचित है और घटना के आकस्मिक मोड़ से पाठक में कौतूहल उत्पन्न हो जाता है। कथानक में कभी-कभी भावुक तथा संवेदनशील घटनाओं के साथ राघव जी की दार्शनिक, वैचारिक, सिद्धांतवादी प्रवृत्ति का परिचय हो जाता है, जो समाज के विकास के साथ कथानक का भी विकास करते हैं। और किसी मार्मिक प्रसंग द्वारा कथा का अंत हो जाता है। कथानक का अंत ही महत्त्वपूर्ण तथा उदात्त माना जाता है, जो समाज और मनुष्य को नया मार्ग, नई दिशा की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

(अ) राई और पर्वत :-

'राई और पर्वत' उपन्यास के कथानक का आरंभ गांव के पुलिस थाने के वातावरण से चित्रित हुआ है, साथ ही उसका विकास कथा के मध्य के निकट से

हुआ है। फिर भी कथा की घटनाएँ एक-दूसरे से अंत तक जुड़ी हुई है। इस उपन्यास को चार भागों में विभाजित किया जाता है। इसकी ग्राम-जीवन पर आधारित एक कथा है। उपन्यास की अधिकारिक कथा रामभरोसे और विद्या पर आधारित है। और इस मुख्य कथा का विकास करते हुए फूलवती और हरदेव की कहानी है, जो गौण कथा के रुप में आई है। कथानक का आरंभ पुलिस थाने के वातावरण और विद्या द्वारा हरदेव का कत्ल के साथ हुआ है। इसी प्रसंग को जोड़ते हुए लेखक ने द्वितीय अध्याय में विद्या के जीवन में आयी समस्याओं का चित्रण किया है। तृतीय और चतुर्थ अध्याय में सामाजिक कुरीतियाँ और विद्या के जीवन संघर्ष को चित्रित किया है। उपन्यास की नायिका 'विद्या' को एक पवित्र तथा आदर्श नारी के रुप में चित्रित किया है, जो भारतीय आदर्श नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

विद्या का विवाह बारह साल की आयु में ही होता है । किंतु विवाह के चार साल बाद ही पति की मृत्यु हो जाती है। विधवा होने के पश्चात् ससुरालवालों के अत्याचारों से त्रस्त होकर विद्या मायके आती है, परंतु मायके में भी माँ 'फूलवती' बूढ़े की ब्याहता होने के कारण हरदेव से प्रेमसंबंध रखती है। हरदेव के साथ चल रहे अपने प्रेम संबंध को छिपाए रखने के लिए फूलवती विद्या को पाप करना सीखाती है जो विद्या को अपवित्र लगता है। विद्या, विधवा जीवन और अपने पवित्र चरित्र को बचाए रखने के लिए संघर्ष करती है, उसका अंत तक पालन करना चाहती है। परंतु इसके लिए विद्या को न माता-पिता की सहायता मिलती है और न समाज की। निर्दोष होते हुए भी विद्या को माँ-बाप तथा समाज पापिनी एवं कलंकिनी मानता है । विद्या के निर्दोष होने का परिचय देते हुए फूलवती कहती है -

"लड़की निर्दोष है। मैंने भंग देकर इस लड़की को पागल कर रामभरोसे के साथ बदनाम कराया था।"[4]

विद्या की माँ 'फूलवती' अपने स्वार्थ के लिए विद्या को रामभरोसे के साथ अनैतिक संबंध रखने के लिए उकसाती हैं। अतः विद्या इसका विरोध करती है। परिणामतः माँ अपनी बेटी को दुश्मन समझने लगती है। इससे माँ-बेटी में झगड़े होते रहते हैं। ऐसे ही एक दिन फूलवती का दुश्चरित्र खुल जाता है। और अपने चरित्र पर पर्दा ड़ालने के लिए तथा अपमान के ड़र से सती जाती है। फूलवती से बिछड़ने के गम में प्रतिशोध की आग में जलता हुआ हरदेव विद्या को बरबाद करना चाहता है। वह कहता है, - "जिसकी वजह से तैंने अपनी माँ और मेरी प्यारी को जिंदा जलवा दिया है, तो उसे मैं आज पांवों से कुचलकर जाऊंगा। तूने माँ को मार ड़ाला तो मैं तुझ बदनाम को ऐसा कर दूंगा कि तू अपने आप और अपने परमात्मा के सामने भी सिर न उठा सके।"[5] हरदेव का प्रतिकार करने के प्रयास में विद्या के हाथ से हरदेव का खून हो जाता है, जिससे समाज द्वारा विद्या और भी कलंकित मानी जाती है। किंतु फूलवती की ढ़ोंगी पति सेवा और सती जाने के कारण समाज उसे महान पतिव्रता और सती-सावित्री मानता है।

रामभरोसे, विद्या की पूर्व जिंदगी से परिचित होने के कारण वह विद्या के लिए जान की बाजी लगाकर उसे निर्दोष छुड़ा लेता है। परंतु गांववाले विद्या को चैन से जीने नहीं देते। गांव की बेटी होते हुए भी वे हर तरह से विद्या को लूटना चाहते हैं। उसका जीवन दूभर कर देते है। परिणामतः विद्या समाज के खिलाफ विद्रोह करती हुई अपने अहं एवं स्वाभिमान को दूर रखकर अपनी सहायता करनेवाले रामभरोसे को हमेशा के लिए अपनाती है, जिससे वह घृणा करती थी।

लेखक ने इस कथा में नारी के भिन्न-भिन्न रुपों का चित्रण किया है। फूलवती, माँ होकर भी अपनी वासना तृप्ति के लिए पति को, समाज को अंधा

बनाकर अपने बचपन का साथी हरदेव से प्रेम संबंध रखती है। अपने देवर को जहर देकर मार डालती है। साथ ही अपने पापों को छिपाए रखने के लिए अपनी बेटी को पाप की राह पर चलाना चाहती है। जब कि विद्या कम उम्र में विधवा होकर भी अपनी इज्जत बचाने के लिए किसी भी संकट का सामना करने के लिए तैयार रहती है। सुसंस्कारित होने के कारण विद्या अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। अपनी माँ के अनैतिक संबंधों को छिपाए रखते हुए उसकी पवित्रता को बनाए रखती है। क्योंकि विद्या माँ के रुप को महान एवं पवित्र समझती है। अपनी माँ के बारे में उसका कथन है,

"माँ संसार में सबसे पवित्तर होती है। उसका नाम मैं गिराऊँ अपने लिए क्या होगा? मैं भली बन भी गई तो क्या भूल जाऊं कि मुझ पर उसने जो जुलम किया उसके लिए अगनी में जीती ही जल के उसने प्रास्चित कर दिया वह उसके हिरदे की कितनी बड़ी बात थी। कितनी बड़ी ममता थी। उसने मुझे छाती से लगाकर दूध पिलाया था।"[6] विद्या अंत तक जीवन में आई कठिनाइयों के साथ संघर्ष करते-करते थक कर ढोंगी समाज का कड़ा विरोध करती है और रामभरोसे को अपनाती है।

फूलवती भी अन्याय की शिकार बन चुकी थी। परिणामतः वह मानसिक दृष्टि से विकृत लगती है। सामाजिक तथा परिवारिक प्रहार से फूलवती अनमेल विवाह का शिकार बन जाती है। जिसका कारण चाचा का पैसों का लालच था। ससुराल में देवर द्वारा बलात्कार की शिकार बन जाती है। इसी कारण प्रतिशोध की आग में जलती हुई वह अपने पति, पुत्री और समाज के साथ दुर्व्यवहार करती है। अपने देवर का जीवन नष्ट कर देती है। फूलवती की इस अवस्था का कारण पुरुष, समाज और

अर्थहीनता है।

'राई और पर्वत' ग्रामीण जीवन पर आधारित होने के कारण ग्रामीण समाज का वातावरण, रहन-सहन, बोल-चाल, रीति-रिवाज, सामाजिक विडंबना एवं भ्रष्टाचार, लोगों के आचार-विचार, परस्पर अनैतिक व्यवहार आदि की स्पष्ट, सूक्ष्म और कलात्मक ढंग से अभिव्यक्ति राघव जी ने चित्रित की है। इसी कारण यह उपन्यास रोचक लगता है जैसे- बालविवाह और विधवा समस्या की शिकार बनी हुई विद्या का अपने आदर्श एवं पवित्र रूप को बचाने के लिए किया हुआ संघर्ष, माता-पिता और समाज द्वारा उस पर हुआ अन्याय, उसकी विवशता, असहाय जीवन आदि का चित्रण यथार्थ लगता है। साथ ही फूलवती के जीवन में आए उतार-चढ़ाव के कारण पाठक के मन में कौतूहल उत्पन्न होता है। रामभरोसे तथा हरदेव का परिस्थितिवश हुआ हृदय परिवर्तन आदि का चित्रण, एक असहाय एवं विधवा नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण तथा दुर्व्यवहार आदि वर्तमान स्थिति के अनुसार स्वाभाविक ही लगता है। राघव जी ने कथानक के प्रसंग तथा घटनाओं को एक-दूसरे से संबंधित बड़े ही कलात्मक ढंग से चित्रित किए हैं जो सत्य और विश्वसनीय लगते हैं।

(ब) <u>पतझर</u> :-

'पतझर' उपन्यास के कथानक का आरंभ कथोपकथन से हुआ है। इस उपन्यास का कथानक एक शहरी जीवन पर आधारित है, जिससे मानवी जीवन की सत्यता तथा सार्थकता का ज्ञान होता है। यह उपन्यास 13 भागों में विभाजित है। संपूर्ण कथानक मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा पर आधारित है। इसमें प्रमुख समस्या जातिवाद, प्रेम समस्या, स्त्री-पुरुष का परस्पर आकर्षण आदि पर आधारित है। इस

कथा में आधुनिक युग के दो मनोरूग्णों के इलाज के साथ कथानक में नया मोड़ आता है। इस उपन्यास की कथा में पात्रों के सहारे विविध विषयों पर चर्चात्मक बहस को प्रस्तुत किया है, जिसमें भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति, स्त्री-पुरुष संबंध, परस्पर आकर्षण, स्त्री-पुरुष के अधिकार, वर्णव्यवस्था, पुराने तथा नये विचार, यौन संबंध आदि व्यापक विषय के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत कर पाठक के साथ समाज को भी नई दृष्टि देने का प्रयास किया है और अंधकार से उजाले की ओर जाने का मार्ग दिखाया है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा को नाटकीय शैली में प्रस्तुत किया गया है जैसे - दो मनोरुग्णों को उनके पिता द्वारा एक ही डॉक्टर के पास इलाज के लिए ले आना। दोनों के विवाह के लिए समाज एवं परिवार का विरोध और अंत में अस्पताल में उन दोनों का अचानक मिल जाना, जिससे दोनों की प्रेम कहानी का राज खुल जाने से कथानक में रोचकता उत्पन्न होती है। परंतु कहीं-कहीं राघव जी ने डॉ. सक्सेना द्वारा मानव-जीवन संबंधी अपने दार्शनिक, सिद्धांतवादी विचारों से कथानक का विकास करने का प्रयास किया है, जो उपन्यास की कथा से संबंधित है। जो जीवन पक्षों के महत्त्व का मूल्यांकन करता है। मानव जीवन की समस्याओं की व्याख्या करता है। राघव जी ने मानव-जीवन के वर्तमान जन्म को पूर्व जन्म से संबंधित दिखाया है। इसी आधार पर उपन्यास की कथा को प्रस्तुत किया है।

जगन्नाथ और मोहिनी मनोरुग्ण हैं, जिनका इलाज विलायत से लौटे हुए मनोविशेषज्ञ डॉ.सक्सेना करते हैं। यह दोनों प्रेमी एक-दूसरे से बिछड़ जाने के गम में मनोरुग्ण बन जाते हैं। जगन्नाथ, जिसकी आँखे अच्छी होने पर भी उसका मत है कि 'मुझे कुछ दिखाई नहीं देता'। मोहिनी, गूंगी बनने का बहाना करती है, जब भी

बोलती है कविता के रुप में गाकर बोलती है। इनका इलाज करते-करते डॉक्टर इन मनोरुग्णों के पूर्व जन्म तक संम्मोहन प्रक्रिया से पहुँच जाते हैं, जिसके सहारे जगन्नाथ के दो जन्मों का और मोहिनी के तीन जन्मों का चित्रण किया गया है।

जगन्नाथ हजारों साल पूर्व 'मंदार' नामक पिशाच्च जाति का और साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व 'मकर' नामक राक्षस जाति का पुरुष होने के कारण अपनी जाति के नियमानुसार तथा समाज के बंधन के कारण अपनी प्रेमिका से बिछड़ जाता है। मोहिनी भी चार हजार साल पूर्व 'प्रावर्णा' नामक पिशाच्च जाति में जन्मी थी। पचास साल पूर्व 'रमिया' नामक भंगन थी और तीन हजार साल पूर्व 'प्रतीची' नामक गंधर्वी थी, जिसे समाज के नियमों तथा बंधनों के कारण, जातिभेद, परस्पर आकर्षण आदि के कारण अपने प्रेमी से बिछड़ना पड़ता है। इन अतीत कालीन पूर्व जन्म की काल्पनिक कहानियों से दोनों मनोरुग्णों के जीवन को संबंधित दिखाया है। डॉ.सक्सेना का कथन है, -

"पांच हजार साल पहले भी तुम उसे नहीं पा सके क्योंकि तब पिशाच्च विवाह पद्धति थी। उसके बाद राक्षस विवाह की पद्धति आ गई। सच्चाई यह है कि, युग-युग में स्त्री और पुरुष के पारस्परिक संबंध बदलते रहे हैं और उनके बदलने के विभिन्न कारण रहे हैं।"[7] जगन्नाथ और मोहिनी भी इन्हीं समाजगत तथा पारिवारिक परिस्थिति के कारण एक-दूसरे से बिछड़ गए हैं। अपनी प्रेमिका से बिछड़ने तथा अपनी विवशता को स्पष्ट करते हुए जगन्नाथ कहता है, - "मैं पहुँच सकता हूँ, डॉक्टर साहब, लेकिन मैं इन समाज के बंधनों का क्या करू वह मुझे चाहती है, लेकिन मेरे पास आ नहीं सकती। यह समाज हम लोगों को घोंटकर रख रहा है। ऐसा लग रहा है कि जैसे साँस दबी जा रही है।"[8]

मोहिनी सुसंस्कारित, शिक्षित तथा मजबूरी के कारण अपने माता-पिता तथा समाज की मान-मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहती। मोहिनी के मन का अंतर्द्वंद्व तथा विवशता का आँसु से परिचय हो जाता है। अपनी मजबुरियों को स्पष्ट करते हुए मोहिनी का कथन है, "मैं कुछ नहीं जानती। मेरी मजबुरियाँ ऐसी हैं कि मैं सब कुछ भूल जाना चाहती हूँ। डॉक्टर साहब, उन्होंने मुझे पाल पोस कर बड़ा किया है।"[9] अंत में इन दो मनोरुग्णों की अचानक भेंट से उनके प्रेम का राज खुल जाता है। डॉ.सक्सेना इन दो मनोरुग्णों के पिताओं के मन में स्थित प्रेम समस्या, जातिभेद जैसे कुविचारों का निराकरण कर दो प्रेमियों का विवाह करके अपनी फीस पाते हैं, जिससे दो मनोरुग्णों का अंधापन और गूँगापन नष्ट हो जाता है।

इस उपन्यास में राघव जी ने शिक्षित लड़के-लड़कियों के परस्पर आकर्षण, प्रेम और इससे संबंधित सामाजिक उलझनों एवं कठिनाइयों को प्रस्तुत किया है, जो वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। इन्होंने अपनी कथा के विकास के लिए आधुनिक जीवन के साथ पूर्व-जन्म के सहारे काल्पनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय कहानियों को प्रस्तुत किया है जिससे पूर्व जीवन और वर्तमान जीवन को संबंधित दिखाया है। जो रोचक और कौतूहलपूर्ण लगता है। मनुष्य जीवन की व्यक्तिगत समस्या और सामाजिक समस्या को चित्रित कर उनके दुष्परिणामों को स्पष्ट किया है, जैसे-जगन्नाथ और मोहिनी परस्पर आकर्षण के कारण प्रेम समस्या की शिकार हो जाते हैं और जातिभेद की दीवार के कारण समाज और माता-पिता की मान-मर्यादा का पालन करते हुए एक-दूसरे से बिछड़ जाते हैं। बिछड़ने के कारण मानसिक रुग्ण बन जाते हैं। दो प्रेमियों का मनोरुग्ण बन जाना मनुष्य जीवन की विविध अवस्था को चित्रित करता है। दो प्रेमियों का विवाह कर लेखक ने मानवतावादी दृष्टिकोण से

सामाजिक एकात्मता की ओर बढ़ने का निर्देश किया है।

(क) <u>कल्पना</u> :-

'कल्पना' उपन्यास का कथानक वर्तमान और इतिहास कालीन युग का मिश्रण है। इस उपन्यास के कथानक में लेखक ने युगों-युगों से शोषित एवं पीड़ित नारी-जीवन को चित्रित किया है। नारी के सुसंस्कारित प्रवृत्ति के कारण पुरुष तथा समाज द्वारा अन्याय को सहती आई नारी के विविध रुपों को वर्णित किया है। वे न ही पुरुषों का विरोध करती है और न समाज का। इस उपन्यास का कथानक विफल दांपत्य जीवन पर आधारित है।

'कल्पना' पांच अध्यायों में विभाजित है। इन पाँचों अध्यायों के शीर्षक नारी के नामों पर ही आधारित हैं। प्रथम अध्याय और अंतिम अध्याय 'नीला' और 'विदा' में आधुनिक नारी जीवन की समस्या है, जिसमें अनमेल विवाह के कारण दांपत्य जीवन की विषमता को प्रस्तुत किया है। साथ ही लेखक ने नारी स्वतंत्रता और स्त्रीत्व को जगाने का प्रयास किया है। 'कल्पना', 'अवदातिका', 'बकुलावलिका' इन तीन अध्यायों में काल्पनिक और ऐतिहासिक कहानियों द्वारा विविध रुपों में अन्याय को सहती आई नारी, समाज के बंधन एवं मर्यादा के कारण अपने प्रेमी तथा पति से बिछड़ती आयी है, जिसका यथार्थ वर्णन बड़ी रोचकता और संभाव्यता को प्रस्तुत करता है। नारी को सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। और इसी प्रतीकात्मकता के कारण नारी युगों-युगों से परिवार तथा पुरुष के लिए अपना जीवन समर्पित करती आई है। राघव जी ने कथानक में ऐतिहासिक उदाहरणों के काल्पनिक परंतु मार्मिक प्रसंगों को चित्रित कर समाज की कुरीतियों तथा नारी के नारीत्व पर प्रहार किया है ताकि समाज के साथ-साथ नारी को भी अपने अस्तीत्व का एहसास

हो सके।

इसका संपूर्ण कथानक आत्मकथात्मक शैली में होने के कारण कथा का नायक स्वंय लेखक ही भिन्न-भिन्न बदलते दृश्यों के साथ अनेक रोचक प्रसंगों से पाठकों को परिचित कराते हैं जिससे कौतूहल निर्माण होता है। कथानक पूर्णतः स्मृतियों और कल्पना पर आधारित है। 'नीला' एक आधुनिक विफल दांपत्य जीवन को चित्रित करता है। नीला एक शिक्षित युवती है। उसका विवाह एक डॉक्टर के साथ होते हुए भी उसे वैवाहिक सुखों से वंचित रहना पड़ता है, क्योंकि डॉक्टर का 'निर्मला' नामक एक विवाहित युवती के साथ प्रेमसंबंध थे जो स्कूल में पढ़ाती है। नीला एक सुसंस्कारित भारतीय नारी होने के कारण न वह पति का विरोध करती है और न समाज का। समझदार होने के कारण अपने हृदय को कठोर तथा उदार बनाकर एक रात अपने पति से मिलने आई उनकी प्रेमिका को घर में बुलाकर अपना अधिकार उसे देना चाहती है। क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। किंतु अनजाने में ही नीला के मन का विद्रोह प्रकट होता है,

"जब तक मैं यहाँ हूँ तब तक तुम्हें डर नहीं निर्मला। तुम्हारी ससुराल का दरवाजा खुला रहेगा। ऐसी भूल मत करो। जो पुरुष मुझे उपेक्षित करके तुम्हें ला सकता है,उसका पूरा भरोसा मत करो। संभव है, वह समय पर तुम्हें छोड़ दे।"[10]
जिससे निर्मला और डॉक्टर शर्म से तथा अपमान के कारण एक होटल में आत्महत्या करते हैं। इस दुर्घटना से नीला के मन में पति के प्रति घृणा निर्माण हो जाती है, क्योंकि डॉक्टर और निर्मला ने अपने जीवन के कार्य तथा महत्व को भूलकर जीवन को मिटा दिया था। निर्मला और डॉक्टर, समाज का विरोध कर एक-दूसरे के साथ जीवन बिता सकते थे। परंतु उन्होंने समाज के डर से अपना जीवन समाप्त किया था।

समाज के दबाव के कारण ही डॉक्टर ने नीला के साथ विवाह किया था। अपनी मजबूरी को स्पष्ट करते हुए डॉक्टर नीला से कहता है,

"तुम्हारे पिता ने मेरे पिता को मजबूर किया था। और आपके पिता ने आपको हां।"[11]

निर्मला का पति वकील होने के कारण अपने व्यवसाय में व्यस्त थें इसी कारण अपनी पत्नी की मृत्यु को भूल सकता है। परंतु नीला क्या करे?

इस स्मृतिचित्र के साथ ही लेखक काल्पनिक उड़ान से कालिदास युग में पहुँच जाते है। और 'कल्पना' के सहारे 'मेघदूत' में वर्णित विरहिणी यक्षी के विरही जीवन कथा का परिचय पाठक को कराते हैं। इस कथा से पाठक का मन यक्षी के प्रति सहानुभूति से और समाज के प्रति घृणा से भर जाता है। क्योंकि सामाजिक बंधन के कारण यक्षी अपने प्रेमी यक्ष से हमेशा के लिए बिछड़ गई थी।

'अवदातिका' के सहारे लेखक राम-सीता के विफल दांपत्य जीवन का परिचय पाठक को कराते हैं जो रोचक और कौतूहल उत्पन्न करता है। इसमें मार्मिक प्रसंगों को कल्पना की जोड़ से बड़े कलात्मक ढंग से उभारा है जो संबद्ध और स्वाभाविक लगते है। जैसे अवदातिका ने रंगशाला से मजाक में लाए तपस्वियों का वल्कल सीता अनजाने में पहनती है तभी राम का राजतिलक के रूक जाने, राम को वन जाने की आज्ञा होने की खबर मिलती है। इसी कारण उस वल्कल को अशुभ घटना सूचक के रुप में चित्रित किया है। और अवदातिका की भी यही धारणा है कि वल्कल के कारण ही राम-सीता को वन जाना पड़ा। महान तथा पवित्र सीता पर समाज के लगाए गए लांछन के कारण लोक-लाज तथा दबाव में आकर राम को

विवश होकर अपनी पत्नी सीता को दूर रखना पड़ता है। सीता भी उच्चकुलोत्पन्न, सुसंस्कारित और महान ह्रदया होने के कारण न समाज का विरोध करती है और न पति का विरोध करती है।

बदलते दृश्य के साथ लेखक पाठक को विदिशा नगर के राजा 'अग्निमित्र' का परस्पर आकर्षण तथा यौन समस्या से निर्मित प्रेम कहानी का परिचय देते हैं। अग्निमित्र अपनी दो रानियों के होते हुए भी एक अति सुंदर, कोमल, कलानिपुण, 'मालविका' को वश में करने का प्रयास करता है। बकुलावलिका न चाहते हुए भी उसकी सहायता करती है, क्योंकि मजबूरी तथा समाज के दबाव में आकर वह सहायता के लिए विरोध नहीं कर सकती।

इन कहानियों को उदाहरण स्वरुप प्रस्तुत कर राघव जी ने 'विदा में नीला के सवाल का जवाब दिया है, जो युगों-युगों से अन्याय सहती आई नारी का विकास कर सकता है। राघव जी का कहना है कि नीला को अपना जीवन दूबारा शुरु करना चाहिए। अपने जीवन को व्यस्त बनाना चाहिए। अपने यौन जीवन से विरक्ति दिखाकर या संन्यासिनी बनकर लोगों को प्रभावित न करने का संदेश उन्होंने दिया है। पुरुष की गुलामी को छोड़कर अपनी आजादी स्वयं हासिल कर अपनी बौद्धिक क्षमता एवं अपने बलबुते पर, परिवार तथा समाज में अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने का सुझाव दिया है। इस उपन्यास के कथानक में राघव जी ने नीला के माध्यम से युगों-युगों से पीड़ित नारी के वास्तविक जीवन को अभिव्यक्ति दी है। साथ ही नारी के नारीत्व को उकसाने का प्रयास किया है जिससे लेखक के विद्रोही रुप का परिचय होता है। ऐतिहासिक और आधुनिक युगीन नारी जीवन का तुलनात्मक अध्ययन कराते हुए कथा में रोचकता निर्माण की है। कथानक की प्रमुख समस्या

अनमेल विवाह की है, जिसके कारण युवक-युवतियों को सुख से वंचित रहना पड़ता है जैसे - नीला और डॉक्टर के अनमेल विवाह से न ही नीला को वैवाहिक सुख मिलता है और न डॉक्टर और निर्मला एक-दूसरे को हमेशा के लिए अपना सकते हैं। इस समस्या के दुष्परिणाम को भी दिखाया है कि अनमेल विवाह के कारण डॉक्टर और निर्मला अंत में आत्महत्या कर अपना जीवन नष्ट करते हैं, जिससे नीला का भी जीवन बरबाद होता है।

इस प्रसंग के साथ लेखक ने वर्तमान स्थिति के यथार्थ रुप को चित्रित किया है। लेखक आधुनिक जीवन से संबंधित अतीत कालीन जीवन के उदाहरणों को प्रस्तुत कर पाठकों के मन में कौतूहल उत्पन्न करने में सफल हुए हैं। युगों-युगो से नारी के शोषित रुप का चित्रण कर उन्होंने समाज की कुरुपता पर प्रहार किया है और नारी को उसके सबला रुप का एहसास दिलाया है, जिसे राघव जी शक्ति और प्रेरणास्त्रोत मानते हैं। नारी समस्या के प्रति निर्देश कर नारी को साहसी, स्वावलंबी तथा सम्मानित एवं गौरवमयी जीवन जीने की प्रेरणा दी है। यही कथानक का मूल उद्देश्य है।

अतः राघव जी ने अपने उपन्यासों के कथानक विविध तथा व्यापक विषय के आधार पर प्रस्तुत किए हैं। इनमें ग्रामीण तथा शहरी जीवन, पूर्व जन्म कहानी से संबंधित वर्तमान जन्म की कहानी साथ ही ऐतिहासिक मानवी जीवन और आधुनिक मानवी जीवन का तुलनात्मक अध्ययन कर कथानक को रोचक और प्रवाहपूर्ण बनाया है। मनुष्य जीवन की समस्या के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं को चित्रित कर लेखक ने पाठक के मन में रोचकता, कौतूहल उत्पन्न किया है। साथ ही विविध मार्मिक प्रसंगों की सहायता से मनुष्य जीवन की विविध अवस्थाएँ एवं जीवन पक्षों के

महत्त्व को स्पष्ट किया है। ऐसी कथाओं से तत्कालीन देशकाल तथा वातावरण का वास्तविक चित्र आँखों के सामने खडा हो जाता है, जिससे हमे कथानक की घटनाएँ, कथानक के पात्र हमारे आसपास के जीवन की सच्ची प्रतिकृति लगते हैं।

राघव जी ने अपने उपन्यासों के कथानक के संबंध में श्री विपिन बिहारी ठाकुर का कथन है,

"पहली दिशा में इन्हें जीवन की यथार्थताओं ने उन्मुख होने को विवश किया और मूलतः सामाजिक उपन्यास लिखे गए। इनके उपन्यासों के कथानक मानव-समाज की यथार्थ समस्याओं का उद्घाटन करते हैं। वे हमारे समाज के होते हैं,परिणामतः सहज ही विश्वसनीय भी तथा प्रभावशाली भी।"[12] यह तो सत्य है कि, राघव जी के उपन्यासों के कथानक विश्वासपात्र और प्रभावित करते हैं। कथानक में कथित घटनाएँ सत्य घटनाओं पर आधारित लगती हैं। उन्होंने वर्तमान जगत के मानवी जीवन, मानवी पीड़ा का अध्ययन तथा सूक्ष्म निरिक्षण कर उसे कलात्मक ढ़ंग से समाज के सामने प्रस्तुत किया है और लेखक होने के नाते अंत में अपने संदेश तथा सुझाव से समाज तथा मनुष्य का विकास करने का प्रयत्न किया है।

2.1.2 <u>पात्र तथा चरित्र-चित्रण</u> :-

पात्र तथा चरित्र-चित्रण उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्व माना जाता है। उपन्यास के कथानक का विषय मनुष्य और उसके जीवन पर आधारित होता है, जिससे मानव चरित्र के गुण तथा विशेषताओं का परिचय हो जाता है। मनुष्य के चरित्र से उसके व्यक्तितत्व की परख की जाती है। अनुकूलता, मौलिकता, स्वाभाविकता, सप्राणता, सहृदयता आदि पात्र तथा चरित्र-चित्रण के गुण माने जाते हैं। जब कथानक

में पात्रों का चित्रण लेखक खुद करता है जिसे प्रत्यक्ष या साक्षात् पद्धति कहा जाता है। और पात्रों के कथोपकथन के आधार पर चित्रित हुए चरित्र को परोक्ष या अभिनयात्मक पद्धति कहा जाता है।

राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर', 'कल्पना' के पात्र उपर्युक्त गुणों पर आधारित हैं। राघव जी ने 'राई और पर्वत' तथा 'पतझर' उपन्यास में पात्रों का चरित्र चित्रण अभिनयात्मक या परोक्ष पद्धति से किया है, तो 'कल्पना' उपन्यास में प्रत्यक्ष या साक्षात् पद्धति का प्रयोग किया है जो पात्रों के चरित्र को प्रकाशित करता है। राघव जी के विवेच्य उपन्यासों के प्रमुख पात्र जितने सजीव, मानवतावादी, सहृदय तथा भावुक लगते हैं उतनी ही कठोरता तथा निष्ठुरता उनके गौण पात्रों से चित्रित हुई है। अतः लेखक ने अपने उपन्यासों के पात्रों के चरित्र-चित्रण से विविधता और विरोधात्मकता को स्पष्ट कर मनुष्य स्वभाव के भिन्न-भिन्न पहलुओं को सूक्ष्म निरिक्षण के साथ समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों के पात्रों में व्यक्तिगत या सामाजिक परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता दिखाई देता है। जो किसी पात्र के चरित्र को महान तथा आदर्श बना देता है, तो किसी पात्र के चरित्र का अधःपतन हो जाता है, जो स्वाभाविक भी लगता है। राघव जी के पात्र अपने चरित्र से पाठक के मन में कभी-कभी कौतूहल पैदा करते हैं तो कभी घृणा तथा नफरत पैदा करते हैं इसी कारण वे स्वाभाविक या मौलिक लगते हैं। साथ ही राघव जी की कलात्मकता और पात्रों की वर्णन शैली से उनके पात्र पाठक को प्रभावित करते हैं जैसे 'राई और पर्वत' की विद्या तथा रामभरोसे, 'पतझर' के डॉ.सक्सेना, 'कल्पना' के नीला, अवदातिका, बकुलावलिका आदि। उपर्युक्त उपन्यासों के प्रमुख पुरुष पात्रों में – रामभरोसे, डॉ.सक्सेना, लेखक आदि हैं। तो प्रमुख स्त्री पात्रों में विद्या, मोहिनी, नीला, अवदातिका, बकुलावलिका हैं।

(अ) प्रमुख पुरुष पात्र :-

रामभरोसे :-

'राई और पर्वत' के प्रमुख पुरुष पात्र तथा नायक के रुप में 'रामभरोसे' को चित्रित किया है, जो क्लीनर का काम करता है। रामभरोसे का चरित्र साधारण से असाधारण सा चित्रित किया गया है। अनाथ तथा अनपढ़ होने के कारण सभ्यता और संस्कारों का अभाव उसके चरित्र में दिखाई देता है। साथ ही ग्रामीण वातावरण का प्रभाव उसके स्वभाव गुणों से स्पष्ट होता है जैसे - पुलिस थाने के नाम से आरंभ में घबरा जाना, नटखट, चंचल, बेशर्मी आदि के साथ अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक परिस्थितिनुसार गुणों में परिवर्तन दिखाई देता है, जिससे पाठक के मन में उसके प्रति आदर तथा सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है।

रामभरोसे गरीब ब्राह्मण परिवार का एक गोरा युवक था। परंतु अनाथ और गांव के रहन-सहन के कारण एक गुंडे जैसा दिखता था। रामभरोसे को हरदेव ने पाला था, वह ड्राइव्हर था। रामभरोसे क्लीनरी के साथ-साथ मटका, जुआ आदि खेलकर बहुत पैसा कमाता था। वह विधवा 'विद्या' को चाहता था परंतु विद्या उससे घृणा करती थी। तब एक दिन फूलवती के कहने पर रामभरोसे विद्या को छेड़ता है और विद्या उसका विरोध करती हुई दरांत से उसे मारती है। जिससे वह विद्या के प्रति और भी आकर्षित हो जाता है। विद्या की पवित्रता उसे आकर्षित कर लेती है और खून के इल्जाम में विद्या का जेल जाने के पश्चात् अपनी सोच और समझदारी से वह विद्या को छुड़ा लेता है। विद्या को छुड़ाने के लिए रामभरोसे पूर्णतः कंगाल हो जाता है। अब तक की कमाई विद्या के लिए बरबाद कर देता है। चौकीदार से लेकर नेता लोगों तक रिश्वत देकर अपने मीठे वक्तव्य से उन्हें अपनी ओर खींच

लेता है; जिसे राघव जी ने बहुत ही कलात्मक ढंग से चित्रित किया है जैसे एक जगह सरकारी वकील माधोनारायण से विद्या की पवित्रता का परिचय देता हुआ उसका कथन है जो विद्या की तरह अनेक असहाय, बेबस नारियों की परिस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, -

"हूजूर मर जाऊंगा। बेवा की आह है। उसका कोई नहीं। आप जिरह करेंगे तोयह न भूल जाए सरकार। कतल करते किसीने देखा सरकार। औरत की इज्जत का सवाल है। अगर वह फांसी पर चढ़ गई तो कोई औरत फिर इज्जत के लिए नही खड़ी होगी सरकार। सब तरफ पाप ही पाप फैल जाएगा।"[13] इस कथन से रामभरोसे की समझदारी, व्यावहारिकता एवं सिद्धांतवादी रुप दिखाई देता है जो एक ग्रामीण वातावरण में रहते हुए भी मानवता को बनाए रखता है।

कहीं-कहीं रामभरोसे में व्यंग्यात्मक भाषा का चित्रण हुआ है। एक प्रसंग में विद्या के चरित्र की पूछताछ करने के लिए रामभरोसे को थाने में बुलाया जाता है। परंतु प्रथमतः वह घबराकर सीधा जवाब नहीं देता तो दरोगा चिल्लाते हुए उसकी खाल खिंचवाने की धमकी देता है। तब रामभरोसे बेशर्मी तथा व्यंग्यात्मक दृष्टि से थाने की दीवार पर लगी महात्मा गांधी की तस्वीर के नीचे लिखे वाक्य को जोर-जोर से पढ़ता है,

''मीठे वचन बोलिए। आप जनता के सेवक है।"[14] इससे रामभरोसे में स्थित सतर्कता, सजगता आदि पहलुओं का परिचय हो जाता है। रामभरोसे में सभ्यता के अभाव के कारण उसका मन एक सभ्य, अच्छा आदमी बनने के लिए तड़प रहा है। वह विद्या के साथ शादी करके एक आम आदमी की जिंदगी जीना चाहता था।

परंतु रामभरोसे के प्रति विद्या की नफरत के कारण उसकी इच्छा अधूरी ही रह जाती है। भावुकता के साथ वह कहता है, "हमें और कौन देगा अपनी लड़की। हम खुद देनेवाले होते तो अपने-आपको न देते ऐसे हमारे गुण हैं। हजूर। बाजार की चाट में और बात है। घर बसाना अच्छे आदमी का काम है न?"[15]

विद्या की पवित्रता, सच्चाई एवं आदर्श से रामभरोसे प्रभावित हो जाता है और विद्या की नफरत, घृणा को सहते हुए उसका धीरज बढ़ाता है। उसको छुड़ाने के लिए अनैतिक मार्ग से पैसों का इंतजाम कर विद्या की तरफ से गवाही देकर विद्या को निर्दोष साबित करना चाहता है। क्योंकि रामभरोसे विद्या के पूर्व जीवन से परिचित था और विद्या की बदनामी के लिए जिम्मेदार वह स्वयं को मानता है। विद्या को निर्दोष साबित कर जिस हरदेव ने उसका पालन-पोषण किया था उसी के खिलाफ गवाही देता है। इससे रामभरोसे की निष्पक्षता और सच्चाई का परिचय होता है। अंत तक विद्या के जीवन संघर्ष में हर तरफ से उसकी सहायता करता है। उसे सहारा देता है। इससे रामभरोसे की मानवतावादी दृष्टि स्पष्ट हो जाती है। रामभरोसे के चरित्र से एक सामान्य व्यक्ति के मन में परिस्थिति के अनुरुप स्वाभाविक बदलाव का चित्रण हुआ है, जो जाने-अनजाने अपने व्यक्तित्व तथा गुणों के सहारे अपना और अन्य लोगों का विकास करने का प्रयास करता है। जिससे रामभरोसे की सहृदयता मौलिकता का परिचय होता है।

'राई और पर्वत' में रामभरोसे के साथ गौण पात्रों में हरदेव और गिरिधर पंडित को चित्रित किया है। वे सच्चाई के मार्ग को छोड़कर झूठा रास्ता अपनाते हैं। उनके प्रति पाठक के मन में द्वेष, मत्सर, तिरस्कार तथा घृणा उत्पन्न होती है।

डॉ.सक्सेना :-

'पतझर' उपन्यास के प्रमुख पात्र डॉ.सक्सेना हैं। आरंभ से अंत तक उपन्यास की कथा उनके ही इर्द-गिर्द घूमती है। डॉ.सक्सेना विलायत से लौटे हुए एक उच्च शिक्षित मनोविशेषज्ञ हैं। वे एक मानवतावादी डॉक्टर के रुप में सामने आते हैं। वे मरिजों के साथ सहानुभूति तथा सहृदयता से पेश आते हैं। उनके साथ दोस्त जैसा व्यवहार करते हैं। अपनी मीठी, कोमल वाणी में मित्रता का भाव पैदा करते हैं ताकि मरीज अपने दुख, अपने दर्द को बेझिझक उन्हें कह सके और इलाज कराना आसान बन जाए। डॉ.सक्सेना उच्चशिक्षित, तज्ञ और अपने जीवनगत अनुभवों से परिपूर्ण होने के कारण समाज के भिन्न वर्ग, भिन्न स्वभाव के लोगों की अवैचारिकता को अपने ज्ञान और विचार शैली से उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। जैसे -

मोहिनी के पिता 'हरबंसलाल' जातिभेद माननेवालों में से थे। वे अपनी बेटी का प्रेमी पर जातीय होने के कारण संतप्त हो जाते हैं। उन दोनों का विवाह करने के बजाय छुआछूत की भाषा करने लगते हैं। तभी सक्सेना हरबंसलाल की उच्च कुलोत्पन्न होने के गर्व को दूर करते हैं। डॉक्टर का कथन है,

"आप जो जाति का इतना गर्व करते हैं, यह मत भूलिए कि आप जिस देश में रहते हैं उसमें दर्जे बने हुए हैं। मैं आपको एक बात बता दूँ कि हिंदुस्थान में इतनी ऊँच-नीच होते हुए भी हर जाति का आदमी अपनी जाति को दूसरी जाति से कम नहीं समझता। आप एक धोबिन से ब्याह नहीं कर सकते, भले ही आप कायस्थ हों। आपको भंगी भी अपनी लड़की देने को तैयार नहीं होगा, इसलिए की उसकी भी एक सामाजिक मर्यादा है।..... इस देश की सबसे बड़ी विचित्रता है कि यहाँ ऊँच-नीच के सैंकड़ों बंधन होते हुए भी ऊँच को यह भी

अधिकार नहीं है कि वह नीच के समाज में हस्तक्षेप कर सके।"[16] जिससे हरबंसलाल के गर्वहरण के साथ विभिन्न जाति-धर्मों से युक्त भारत देश से परिचित कराया है। अतः डॉक्टर सक्सेना की वैचारिक, सिद्धांतवादी, आदर्शवादी, अस्तित्ववादी गुणों की पहचान होती है।

उपन्यास के नायक का पेशा डॉक्टरी होने के कारण उन्हें अपने डॉक्टरी जीवन के सम्मुख मरीज की उम्र को देखकर बर्ताव करना पड़ता है। डॉक्टर मनोविशेषज्ञ होने के कारण उनके पास इलाज के लिए आनेवाले व्यक्ति भी मनोरुग्ण ही होंगे। वे दिमागी हालत से विकृत होने के कारण इलाज में दिक्कत या कठिनाइयाँ आने की संभावना हो सकती है। इसी कारण मरीजों के इलाज के लिए पाए हुए शिक्षित ज्ञान के बावजूद उन्हें अपनी बौद्धिक क्षमता के साथ ही अपनी स्वभावगत कलाओं का प्रयोग करना पड़ता है। उदाहरणार्थ - मरिजों के साथ दोस्त जैसा माहौल पैदा करना, मरिजों के शौक, इच्छा-आकांक्षा को जानकर उसकी मदद से मरिजों के मन में डॉक्टरी पेशे के प्रति विश्वास पैदा करना। इससे उनके इलाज के लिए मदद मिलती है। डॉक्टरों की मीठी, कोमल वाणी, अपनापन और सहृदयता के कारण मरीजों की बीमारी हट सकती है जैसे - डॉक्टर सक्सेना ने जगन्नाथ और मोहिनी के मन में अपनापन निर्माण किया था। वे दोनों भी अपनी बिती जिंदगी के संबंध में डॉक्टर को स्पष्टता के साथ बता देते हैं। साथ ही डॉक्टर उनके पूर्व जन्म से संबंधित वर्तमान जीवन का स्पष्टीकरण कर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। उनकी इच्छा-आकांक्षा की पूर्णता के लिए सहायता करते हैं जैसे - जगन्नाथ और मोहिनी के पिताओं के मन में स्थित जातिभेद की गलतफहमियों को दूर कर दो बिछड़े प्रेमियों का अंतर्जातीय विवाह करा कर उन्हें हमेशा के लिए मिला देते हैं, जो देश की एकात्मता के लिए

आवश्यक माना गया है। डॉक्टर ने अपने मरिजों के इलाज के साथ-साथ समाज में प्रचलित अंधविश्वास, भेदभाव, वर्णव्यवस्था, स्त्री-पुरुष अधिकार, सेक्स-संबंध, आधुनिक तथा पुराने विचार आदि को चर्चात्मक बहस के साथ स्पष्ट कर उनसे निर्मित समस्याओं का विनाश करने का प्रयास किया है जिससे मनुष्य, समाज और देश का भी विकास संभव है। डॉ.सक्सेना मरिजों का इलाज बिना पैसों के लालच से करते हैं जिससे उनका समाज सेवक का रुप उभरकर आता है। मरिजों के इलाज की सफलता से ही उन्हें अपनी फीस मिल जाती है। लेखक ने डॉ.सक्सेना के सहारे आधुनिक युग के डॉक्टरों की कुरुपता तथा समाज के दुर्व्यवहार के प्रति निर्देश किया है।

'पतझर' में गौण पात्रों के रुप में जगन्नाथ, दीनानाथ, हरबंसलाल आदि पात्रों को चित्रित किया है।

लेखक :-

'कल्पना' उपन्यास का नायक स्वयं लेखक ही है जिन्होंने 'मैं' शैली को अपनाकर उपन्यास के आरंभ से अंत तक अपना अस्तित्व प्रस्थापित किया है। इस उपन्यास का कथानक तथा वातावरण नायक की स्मृतियों और काल्पनिक प्रसंगों से मिश्रित ऐतिहासिक कहानियों पर आधारित है। इन कहानियों को चित्रित करते-करते लेखक की विशेषताओं का प्रकाशन हो जाता है। इस उपन्यास में नायक का समाज तथा पुरुषों की कठोरता के प्रति विद्रोही रुप का परिचय होता है जो युगों-युगों से पीड़ित नारी-जीवन की कहानियों के सहारे नारी के प्रति पुरुष तथा समाज के दुर्व्यवहार को उद्घाटित करता है। नायक ने अपनी ही पुरुष जाति के प्रति विरोध, असंतोष, तथा घृणा प्रदर्शित कर नारी की महानता तथा समर्पित, त्यागमयी रुप को समाज के सामने स्वाभाविक तथा रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। इससे लेखक की

निष्पक्षता तथा व्यावहारिक गुण की पहचान हो जाती है। जैसे – नीला और डॉक्टर के विवाहित जीवन में डॉक्टर का अपनी पत्नी को एक पराई औरत समझना तथा समाज के डर से दबाव से निर्मला के साथ विवाह न करना आदि प्रसंगों का चित्रण सत्य और वर्तमान की यथार्थ स्थिति को चित्रित करता है जिससे लेखक की मौलिकता का परिचय मिलता है। वर्तमान की नारी स्थिति से संबंधित नायक ने अपने इतिहास ज्ञान के सहारे सीता के प्रति हुए अन्याय का वर्णन किया है, जो सती–साध्वी और पवित्र होकर भी समाज द्वारा उसे लांच्छनिय माना जाता है और अपनी पत्नी की पवित्रता पर अविश्वास दिखाकर लोक लाज तथा समाज के दबाव के कारण सीता से राम को बिछड़ना पड़ता है। 'मेघदूत' में वर्णित यक्षी भी समाज के बंधन के कारण अपने प्रेमी से बिछड़ जाती है। इस प्रकार के उदाहरणों से लेखक के इतिहास ज्ञान के साथ ही सहृदयता, सहिष्णुता का भी परिचय मिलता है जो नारी–जीवन की समस्याओं को स्पष्ट करता है। अपने 'नायक' तथा 'लेखक' होने के नाते वे पात्रों की अवैचारिकता के प्रति निर्देश करते हैं, सुझाव देते हैं, जिससे नारी को अपने अस्तित्व का एहसास हो, साथ ही समाज की कुरीतियों का विनाश हो। नायक ने अपने विचारों से नारी के मन में स्थित झूठे अहं को नष्ट करने का प्रयास किया है जो नारी के नारीत्व को मिटा सकता है। जैसे नायक ने अपने विचारों से नारी को पुरुष की गुलामी छोड़ने, अपने पातिव्रत्य को जननीत्व का गौरव एवं अभिमान मानने का संदेश दिया है। उसे अपने अस्तित्व, अपने दायित्व को समझकर समाज तथा परिवार में अपना स्वतंत्र स्थान निर्माण करने का भी सुझाव दिया है। इससे पात्रों की जीवन कहानी के सहारे नारी तथा समाज की समस्याओं के प्रति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में समाधान प्रस्तुत किया है।

(ब) प्रमुख नारी पात्र :-

विद्या :-

'राई और पर्वत' की प्रमुख नायिका के रुप में लेखक ने 'विद्या' को चित्रित किया है। विद्या का आदर्शचरित्र पवित्र और सहृदय होते हुए भी समाज की कुरुपता, विधवा जीवन की विवशता को प्रस्तुत करता है। विद्या ग्रामीण होते हुए भी सुसंस्कारित, समझदार, व्यावहारिक और सहनशील आदि गुणों से परिपूर्ण है जिससे उसके मन की वैचारिकता का प्रकाशन होता है। विद्या बाल विवाह की शिकार बन जाती है। विवाह के चार साल बाद ही उसे विधवा जीवन को अपनाना पड़ता है। विधवा नारी को समाज असहाय तथा विवश समझकर उसे शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से लूटने का प्रयास करता है। ऐसे ही प्रसंग विद्या के जीवन में आते हैं जिसका कड़ा विरोध कर वह पुरुष और समाज के प्रति विद्रोही रुप को प्रदर्शित करती है। जैसे - विद्या के विधवा होने के बाद ससुराल में सास और जेठानी उसे मानसिक दृष्टि से त्रस्त करती हैं तो ससुर और जेठ उसका शारीरिक शोषण करना चाहते हैं। जिसके कारण विद्या सतर्क होकर मायके लौट आती है परंतु मायके में भी माँ द्वारा उसे बदनामी तथा लांछन झेलना पड़ता है। अपनी पवित्रता को कायम रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। अपनी माँ के सिखाए अपवित्र मार्ग को वह ठुकरा देती है। वह माँ के गंदे विचारों से घृणा तथा द्वेष करती है, उसका विरोध करती है। जिससे विद्या की निष्पक्षता, निर्भयता, आदर्श और पवित्र रुप की पहचान होती है।

विद्या पारिवारिक अपवित्रता के कारण स्वावलंबी, साहसी जीवन जीना चाहती है। पढ़-लिखकर मास्टरनी बनना चाहती है, पुनर्विवाह का विरोध करती है। विद्या का कथन है, "मै ब्याह न करुंगी। मेरा तो विधना ने इतना सुहाग लिखा था।

अब वह लुट गया सो लुट गया। मुझे तो दरजा सात तक पढ़ा दो लड़कियों के किसी मदरसे में मास्टरनी बन जाऊंगी।"[17] परंतु विद्या को अपनी इच्छा परिस्थिति के कारण दबानी पड़ती है। माँ के अनैतिक संबंध के कारण माँ-बेटी में दुश्मनी पैदा होती है जिससे माता-पिता का सहारा भी नहीं मिलता। अतः अकेली एवं असहाय विद्या बरबाद होने से बच जाती है। फूलवती से बिछड़ने का कारण 'विद्या' को ही मानकर हरदेव विद्या पर बलात्कार करने का प्रयास करता है। किंतु प्रतिकार के प्रयास में विद्या के हाथ से हरदेव की हत्या हो जाती है। गांववालों द्वारा कलंकित मानी गई विद्या मर जाना चाहती है, परंतु रामभरोसे जैसे गुंडे का सहारा नहीं चाहती जो उसे छुड़ाने का प्रयास करता है। विद्या की धारणा है कि इसके पीछे रामभरोसे की चाल है। इस संबंध में वह कहती है, "मैं समझती थी तेरी चाल को। तैने मुझे कहीं का नहीं रखा कसाई। तैने मुझे इतना बदनाम करा दिया। लेकिन मैं तेरी नहीं हो सकती।"[18] इससे रामभरोसे के प्रति विद्या की घृणा प्रकट होती है, परंतु विद्या को अपना स्वाभिमान, अपना अहं छोड़ना पड़ता है। गांव के लोगों से घृणित तथा तिरस्कृत विद्या की रामभरोसे ही सहायता करता है और अंत में विद्या हमेशा के लिए रामभरोसे को अपनाती है।

विद्या का चरित्र बड़ा ही सजीव बन पड़ा है जो वर्तमान नारी-जीवन को चित्रित करता है। विद्या भावुक, संवेदनशील होने के कारण परिवार तथा समाज के अन्याय को चुपचाप सहन करती रहती है। किंतु अंत में ढोंगी समाज की कुरीतियों को तोड़ने का संकल्प कर लेती है। अपने अंह को दूर कर समाज के सामने विद्रोही नारी के रुप में आती है। अतः विद्या की दयनीय स्थिती पारिवारिक और सामाजिक कुरुपता को प्रदर्शित करती है।

<u>मोहिनी</u> :

'पतझर' उपन्यास में मोहिनी को प्रमुख पात्र के रुप में चित्रित किया है। मोहिनी मनोरुग्ण के रुप में सामने आती है। शिक्षित और सुसंस्कारित होते हुए अपने प्रेमी से बिछड़ने के गम में उसके दिमाग पर बुरा असर हो जाता है, वह गूंगी हो जाती है जब भी बोलने का प्रयास करती है तो कविता के रुप में गाकर ही बोलती है। जिससे उसके दुखी मन तथा उसकी विवशता प्रकट होती है। जैसे -

"वेदना आई सिमट कर रह गई
प्राण के भीतर थमी-सी रह गई
छोर उसका अब मुझे मिलता नहीं
मौत मेरी जिन्दगी है बन गई।"[19] मोहिनी को इलाज के लिए डॉक्टर सक्सेना के पास लाया जाता है, जहाँ उसके जीवन के साथ हजारों सालों से प्रेम के लिए वंचित रुप को चित्रित किया है। हजारों साल पूर्व अपने प्रेमी से उसे बिछड़ना पड़ता है, और मजबूरन एवं समाज के नियम के कारण किसी दूसरे को अपनाना पड़ता है, वह अपने प्रेमी के साथ-साथ उसके गीतों के प्रति भी आकर्षित थी, शायद इसी कारण वह अपने चौथे जन्म में भी उन गीतों को नहीं भूली है, और वर्तमान जन्म में समाज तथा माता-पिता की मान-मर्यादा का पालन करने के कारण अपने प्रेमी से बिछड़ जाती है। और बिछड़ने के आघात से वह गूंगी बन जाती है जब भी बोलती है गीतों के रुप में गाकर बोलती है। मोहिनी सुसंस्कारित होने के कारण माता-पिता के हृदय को ठेंस पहुँचाना नहीं चाहती। अपने माँ-बाप के प्रति कर्तव्यों का पालन करना चाहती है। परंतु शिक्षित होने के कारण अपनी इच्छा के विरुद्ध विवाह नहीं करना चाहती । उसका मन अंतर्द्वंद्व से घिर जाता है, डॉक्टर सक्सेना उसे

एक ही बात पर सोचने के लिए कहते हैं। मोहिनी एक भारतीय युवती होने के कारण वह एक ही बात पर नहीं सोच सकती। इसके लिए डॉक्टर मोहिनी के पूर्व जन्म के साथ उसके जनम-जनम से पुरुष से दबाए गए रुप को दिखाते हैं, जो प्रावर्णा, रमिया, प्रतीची आदि विविध रुपों के सहारे बलवान पुरुष तथा समाज के हाथ का खिलौना बनाई गई थी। युगों-युगों से पुरुष उसे हरण कर उसके नारीत्व को जबरदस्ती नष्ट करता आया है, और अन्यायों को सहते हुए उसके दिमाग पर बुरा असर हो जाता है। मोहिनी की विवशता तथा मजबूरी स्पष्ट करते हुए मोहिनी का कथन है, "क्या बोलू डॉक्टर साहब, बोलना चाहती हूँ तो बोल नहीं पाती। मुझे बोलने का अधिकार किसने दिया है?"[20] मोहिनी अपनी मजबूरी को अपने गूंगेपन में दबाना चाहती है, अंदर-ही-अंदर घुटकर जीवन बिताती है, परंतु डॉक्टर की सहायता से उसे अपना बिछड़ा प्रेमी मिल जाता है और गूंगापन खत्म हो जाता है।

<u>नीला</u> :-

'कल्पना' उपन्यास के प्रथम अध्याय को 'नीला' शीर्षक से प्रस्तुत किया है, जो 'नीला' नाम की युवती पर आधारित है। लेखक ने नीला का प्रारंभिक परिचय बहुत ही सुंदर तथा आकर्षक शैली में दिया है जैसे "नीली-सी-शाम, नीली-सी-साड़ी। नाम? नीला। मेरे दवात में स्याही भी नीली थी और नीला की लटें उसे जैसे पी गई थी और आसमान को काटकर उसने आँखों में चिपका लिया था।"[21] नीला, लेखक के मित्र के पड़ोस में रहनेवाली एक शिक्षित युवती थी। सीधी-साधी परंतु विचारों से समझदार, व्यावहारिक, दार्शनिक, सिद्धांतवादी थी। नीला का विवाह एक डॉक्टर के साथ होता है जिससे वह खुश थी। परंतु विवाह के बाद उसे पति का प्यार नहीं मिला। नीला वैवाहिक सुखों से वंचित रह जाती है, क्योंकि नीला का पति किसी

दूसरी विवाहित युवती से प्रेम करता था। नीला को डॉक्टर एक पराई औरत समझता है। इससे नीला अकेली पड़ जाती है। किंतु वह अपने पति का विरोध नहीं करती। अपना अधिकार वह छीनकर नहीं लेना चाहती। उसका कथन है - "जितना अधिकार मिलेगा उतना ही लूंगी। जितना मेरे लिए नहीं है, उतने की मुझे आशा ही क्यों करनी चाहिए? उसके न मिलने पर तो अधिक ही दुख होगा न?"[22] इससे नीला के दुखी मन परंतु आत्मसम्मानित रुप का परिचय होता है। नीला सुसंस्कारित और भारतीय नारी होने के कारण अपने पति के विवाहबाह्य संबंध को चुपचाप सहती है। उसका विरोध नहीं करती क्योंकि नीला पति की बदनामी को अपनी बदनामी समझती है। पति का प्रेमिका के साथ घुमना, सिनेमा देखना उसे अंदर-ही-अंदर कुंठित कर देता है। नीला अपने हृदय को विशाल बनाकर एक रात अपने पति से मिलने आयी प्रेमिका को घर में बुलाकर अपना अधिकार देना चाहती है जिससे उसके मन की सहृदयता एवं उदारता का परिचय होता है।

नीला और राजम की बातों से नीला के विद्रोही रुप का चित्रण होता है। नीला के मत से अगर स्त्री, पुरुष से विश्वासघात करती है तो उसे पति द्वारा दंड भुगतना पड़ता है और अगर पुरुष, स्त्री से विश्वासघात करता है तो उसे कुछ नहीं होता। नीला पति-पत्नी के बीच 'विश्वास' को महत्त्वपूर्ण मानती है। परंतु अपने पति और प्रेमिका की आत्महत्या के बाद वह पति से घृणा करती है। नीला आत्महत्या को मूर्खतापूर्ण अविचार तथा कायरता मानती है। पति की मजबुरी के कारण उसे दुख-ही-दुख झेलने पड़ते हैं। जो शोषित तथा पीड़ित नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। नीला का चरित्र आधुनिक विचारोंवाली नारी के रुप में चित्रित हुआ है।

लेखक ने नीला के ही रुप को युगों-युगों से पीड़ित दिखाया है, जो सुसंस्कारित, समझदार होने के कारण पुरुष तथा समाज द्वारा अन्याय सहती आयी है। प्राचीन युग की नीला को पूजनीय माना जाता था, देवी माना जाता था। मध्ययुग में नीला को एक खेत के समान माना जाता था, जिसे पुरुषरुपी किसान हल चलाकर जोतता है, खाद ड़ालता है और उससे संतान रुपी फसल निकालता है। आधुनिक युग में नीला को विश्वासपात्र गुलाम बनाकर उससे अपने धन तथा परिवार की रक्षा करायी जाती है। स्वामिनी बनाकर उसे बंदिनी और बेड़ियों में जकड़ी हुई कैदी बनाया है। परंतु कभी-कभी नीला को अपने अस्तित्व का एहसास हो जाता है और वह विद्रोह कर स्वतंत्र होना चाहती है मुक्त होना चाहती है। नीला के सहारे लेखक ने युगों-युगों से पीड़ित नारी का चित्रण किया है साथ ही नारी-जीवन की मौलिकता, यथार्थता को चित्रित किया है। इस उपन्यास के गौण पात्रों में लेखक ने कल्पित नारियों के सहारे ऐतिहासिक नारी जीवन की यथार्थता का परिचय देने का प्रयास किया है ।

राघव जी ने अपने पात्रों का चरित्र चित्रण अपने विषयज्ञान, सूक्ष्म निरीक्षण, अनुभव के आधार पर किया है, क्योंकि पात्रों के मन में स्थित भावनाओं का अपनी परिस्थितिनुसार उद्घाटित होना यह स्वाभाविक लगता है, जिसमें सहानुभूति, सहृदयता, द्वेष, घृणा, असंतोष, सुख-दुख, विद्रोह, आशा-आकांक्षा भरा रुप पात्रों के सहारे दिखाई देता है। लेखक ने पात्रों के विरोधात्मक रुप को चित्रित किया है, जैसे - पुरुष के ही दो विरोधी रुप - रामभरोसे, जो विद्या की सहायता करना चाहता है और हरदेव - जो विद्या को बरबाद करना चाहता है इसके साथ-साथ स्त्री के भी ऐसे ही रुपों का चित्रण हुआ है - जैसे नीला और निर्मला। नीला अपने पति का अन्याय सहन करती है, उसका विरोध नहीं करती तो निर्मला अपनी पति की आँखों में

धूल झोककर अन्य पुरुष से संबंध रखती है। राघव जी ने पात्रों के जीवन के उतार-चढ़ाव के कारण उनमें परिवर्तन लाकर समाज के सामने एक आदर्श रखने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के पात्र अपने चरित्र से पाठकों को प्रभावित करते हैं। कथानक के अनुसार पात्र सजीव अनुकूल और स्वाभाविक लगते हैं।

2.1.3 <u>संवाद तथा कथोपकथन</u> :-

कथोपकथन द्वारा कथानक का विकास होता है, साथ ही पात्र परिचय और उनके जीवन चरित्र की व्याख्या करता है। लेखक के संदेश तथा उद्देश्य को स्पष्ट करने का कार्य कथोपकथन के माध्यम से किया जाता है। उपयुक्तता, अनुकूलता, संबद्धता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता आदि कथोपकथन के गुण माने जाते हैं।

राघव जी ने अपने उपन्यासों में संक्षिप्त तथा दीर्घ दोनों प्रकार के संवादों का प्रयोग किया है दीर्घ कथोपकथन विषयानुसार दार्शनिक या वैचारिक ज्ञान की अभिव्यक्ति करते हैं, या फिर भावुकता में आकर व्याख्यान के रुप में दूसरे पात्र के सामने दिए जाते हैं – जैसे 'पतझर' में डॉ.सक्सेना के संवाद ऐसे ही दार्शनिक है, जो अपने अनुभव ज्ञान से किसी विषय को स्पष्ट करते है, जिससे नए विचार तथा ज्ञान में वृद्धि हो जाती है। डॉ.सक्सेना मनुष्य शरीर और बीमारियों की उत्पन्नता के संबंध में दीनानाथ और हरिबंसलाल के सामने विचार प्रस्तुत करते हैं जिससे दोनों के ज्ञान में वृद्धि हो जाती है, जैसे – "देखिए, दुनिया में सबसे पहले बीमारी को देवताओं का क्रोध माना जाता था।...................... आप मेरी बात से ऊब तो नहीं रहे है?"[23] ऐसे कथोपकथन को पढ़ते समय पाठक ऊब तो जाता है, परंतु इससे मनुष्य जीवन संबंधी उपयुक्त विचार तथा मनुष्य जीवन के मर्म का उद्घाटन होता है।

लेखक भी अपने लंबे संवाद से सतर्क है जैसे - संवाद के अंत में ऊबकाई की भाषा से श्रोता या पाठक की रुचि को जानता हो ? ऐसे कथोपकथन से पात्रों के सहारे लेखक अपने गांभीर्य विचार और मौलिक चिंतन पाठक के सामने रखते है। पतझर ऐसे ही लंबे संवाद या कथोपकथन से भरा हुआ है ।

'कल्पना' उपन्यास में लेखक ने संक्षिप्त संवादों के सहारे स्त्री को अपने अस्तित्व का एहसास दिलाया है। समाज तथा पुरुष द्वारा युगों-युगों से पीड़ित नारी को स्वतंत्र, मुक्त होने का संदेश दिया है। आधुनिक तथा ऐतिहासिक उदाहरणों के आधारपर पात्रों के संवाद और कथोपकथन से नारी का शोषित, अन्याय को सहता आया रुप चित्रित किया है जैसे - "मैं कहता हूँ - नीला, तू बंदिनी है, दासी है। वह कहती है - क्या करुं, मैं पुरुष का खिलौना बन गई हूँ। पुरुष मुझपर अत्याचार करता है। मै स्वतंत्र होना चाहती हूँ। मैं उसके लिए सब कुछ छोड़कर आती हूँ। उसे सब कुछ देती हूँ। पर मुझे वह सुख नहीं देता।"[24] राघव जी ने इस उपन्यास में वर्तमान कालीन तथा अतीत कालीन नारी जीवन, समस्या का चित्रण संवाद तथा कथोपकथन से चित्रित किया है, जो प्रसंगानुरुप, अनुकूल और प्रभावात्मक है । 'राई और पर्वत' एक आदर्श, पवित्र नारी को चित्रित करता है, जो परिस्थिति के कारण अपनी विधवा स्थिति की असहायता को प्रकाशित करती है - जैसे, - "मर जाऊंगी बाबूजी। जीकर भी क्या करुंगी! विधवा हूँ मैं तो। औरत तो विधवा हुई मरी के समान है। माँ तो सुहागिन थी। मैं क्या उसकी बुराई करुंगी।"[25] साथ ही पात्रों के कथोपकथन से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को भी प्रस्तुत किया है। रामभरोसे विद्या को छुड़ाने के लिए चौकीदार से लेकर नेता तक आठ हजार रुपए उड़ा देता है। वह कायदे-कानून के स्वरुप को तथा पुलिस के रुप को स्पष्ट करता हुआ कहता है,

"परमात्मा एक लीला दिखा गया कि काली भैंस में से सफेद दूध उतरता है, और दूसरी ओर उससे भी बड़ी लीला पुलिस दिखाती है कि काले को सफेद करके फिर सफेद को काला कर देती है।"[26] साथ ही समाज में स्थित अंधविश्वास को भी चित्रित किया है, जो संवादों के माध्यम से प्रकट होता है, जैसे – दीवान जी पंडित रामचरन की बातों को सुनाते हैं, "पंडित रामचरन ने क्या कहा था? कहा था न, कि चिता में किसी ने आग नहीं लगायी। खुद-ब-खुद चिता में आग परगट हुई। ऐसा था परताप उस सत्ती का। होती है कोई आत्मा। पंडित सुखदेव का लड़का बोला, आ रहा हूँ बिरदावन से। आज करीब दो बजे उसने देखा हुजूर। बूढ़े पंडित गिरिधर खड़े हैं – साफ धोती पहने जमनाजी के किनारे ओर साथ थी जो – सत्ती हो गई है न फूलवती, सफेद साड़ी पहने। पंडाने उनसे पूजा-वूजा करवाई।"[27]

राघव जी ने अपने संवाद तथा कथोपकथन को पात्रानुकूल, परिस्थिति के अनुसार प्रस्तुत किया है जो पात्र की स्थिति, समाज की स्थिति को चित्रित करता है। जो कथानक के विकास के साथ-साथ, पात्रों के जीवन चरित्र की व्याख्या करते हैं, राघव जी ने संवादों के माध्यम से व्यक्ति के अंतर्द्वंद्व, मानसिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है जैसे – 'राई और पर्वत' में विद्या, रामभरोसे, फूलवती, 'कल्पना' में नीला, निर्मला, डॉक्टर आदि के संवाद को पढ़कर उनकी स्थिति से पाठक अवगत हो जाता है, जो स्वाभाविक है अतः राघव जी ने सतर्कता, समयसूचकता का ध्यान रखकर अपने संवाद और कथोपकथन को स्पष्ट, अनुकूल, उपयुक्त, संबद्ध प्रस्तुत किए हैं।

2.1.4 देशकाल-वातावरण :-

देशकाल वातावरण में उपन्यास के तद्‌युगीन परिस्थिति, विविध घटनाओं, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, समाज की कुरीतियों, विशेषता आदि का चित्रण स्पष्ट किया जाता है। देशकाल के सामाजिक, प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक भेदानुसार चित्रण किया जाता है, जिससे लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और चित्रण क्षमता का परिचय पाठक को हो जाता है। राघव जी ने अपने उपन्यासों के वातावरण में सामाजिक, प्राकृतिक, तथा ऐतिहासिक वातावरण को चित्रित कर उपन्यासों में प्रभावात्मक, रोचकता, प्रवाहमयता लाने का प्रयास किया है। 'राई और पर्वत' सामाजिक उपन्यास होने के कारण साथ ही ग्रामीण जीवन पर आधारित होने के कारण राघव जी ने बहुत ही कलात्मक ढंग से ग्रामीण वातावरण, लोगों का रहन-सहन, लोगों के आचार-विचार, ग्रामीण समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, अंधविश्वास आदि का चित्रण किया है, जिससे राघव जी की वातावरण सृष्टि की कुशलता का परिचय हो जाता है।

'राई और पर्वत' उपन्यास की कथा का आरंभ ही पुलिस थाने के वातावरण से किया है । पुलिस थाने के सामने एक पेड़, थाने के पीछे खेत, पास ही स्कूल जैसे एक ग्रामीण वातावरण को चित्रित करता है, साथ ही लेखक ने इस गांव का स्थान भी बताया है जैसे, "ऐसे इस गांव में, राजस्थान की सरहद पर जहाँ उत्तर प्रदेश मिलता है, उत्तर प्रदेश सरकार का राज चलता है, जब कि लोग बोलते हैं ब्रजभाषा और खड़ी बोली भी प्रायः चल पड़ी है।"[28] राघव जी ने कहीं-कहीं ऐसा वातावरण तैयार किया है जो मनुष्य की वृत्ति और व्यक्तित्व को प्रस्तुत करता है, जैसे - दरोगा जी का हाथ अनजाने ही कमर में लटकी पिस्तौल पर चला जाना, हंटर से मारने की धमकी देना, लोगों का घबरा जाना सती की चिता में आग प्रगट

होने की अफवाओं से तथा इज्जत बचाने के लिए विद्या के हाथ से खून हो जाने पर विद्या के प्रति लगाया लांच्छन, स्त्रियों में धीरे-धीरे की गई धुसुर-फुसुर आदि के साथ लेखक ने ग्रामीण वातावरण तैयार किया है। विद्या के कैदी रुप का वातावरण प्रस्तुत करते समय हथकड़ियों का खनखनना, सलाखों के बीच विद्या का अकेलापन एक चुहे को उसका साथी बनाना, जो कभी बिल में से झांककर देख लेता है। साथ ही पुलिस थाने में महात्मा गांधी की तस्वीर उसके नीचे लिखा हुआ वाक्य 'मीठे वचन बोलिए, आप जनता के सेवक है' जो पुलिस को जनता का सेवक स्पष्ट करता है। फागुन महिने की हवा में 'पीली' कमर के भौरें की दुपहर के सन्नाटे की गूँज, विद्या के पति की मृत्यु का प्रसंग जैसे "पति की लाश पड़ी थी। सिर तीन जगह से फट गया था, सास छाती पीट-पीटकर हाहाकार कर रही थी। बाहर ससुर और जेठ गवाहों को तैयार कर रहे थे। विद्या के रंगीन कपड़े उतरे, सफेद धोती आई, उसके हाथों की चूडियाँ तोड़ दी।"[29] साथ ही बाजरे के खेत, लौड स्पीकर का बजना। मैली खाकी पतलून और कमीज, पांवो में काले मूण्डा बूट, मूछें आदि से हरदेव का ड्रायव्हर का पेशा आदि सूक्ष्म चित्रण राघव जी ने किया है, जिसको पढ़कर हमारे सामने एक ग्रामीण गांव का चित्र खड़ा होता है और ऐसा लगता है कि यह सब हमारे सामने ही घटित हो रहा है।

'पतझर' आधुनिक और ऐतिहासिकता का मिश्रण है जिसके कारण आधुनिक जीवन के साथ-साथ अतीतकालीन वातावरण को तैयार किया है। विलायत से लौटे हुए मनोवैज्ञानिक तज्ञ, जो दिमाग का इलाज करते हैं, जो आधुनिक मानवी जीवन को प्रस्तुत करता है। तो सड़क पर लोगों की भीड़ इधर-उधर करती हुई, मोटर, तांगे, रिक्शे, कोलाहल आदि शहरी वातावरण को प्रस्तुत करते हैं। शहरी लोगों के

डॉक्टरी पेशे के बारे में विचार इस कथन से स्पष्ट होते है, "मैंने एकाध डॉक्टर को दिखलाया था, वे कहते हैं, न्युरोटिक पेशंट है। अब न्यूरोसिस क्या चीज है। भगवान जाने इन डॉक्टरों की माया को। जिस बीमारी को समझ नहीं पाते उसके लिए एक नाम अंग्रेजी का दे दिया जाता है। आपको खटाई खाने से नुकसान हो जाता होगा, वादी-वादी का दर्द हो जाता होगा, लेकिन यह वे नहीं कहेंगे। डॉक्टर कहेंगे, खटाई खाने से आपको एलर्जी हो जाएगी। यह डॉक्टरों का धंदा। धंदा क्या, इसे तिजारत कहिए, सौदागरी। ऐसे लब्ज बोलते हैं जिनको हम समझ नहीं सकते।"[30] इससे लोगों का डॉक्टर पर अविश्वास दिखाई देता है। उपन्यास मनोविश्लेषणात्मक होने के कारण दो मनोरुग्णों के जरिए लेखक ने उनकी मानसिक विकृति को स्पष्ट किया है कि जगन्नाथ की आँखे ठीक होने पर भी कहता है कि मुझे कुछ दिखाई नहीं देता और मोहिनी अपने गम को गूंगेपन में दबाना चाहती है जब भी बोलती है कविता के रुप में गाकर बोलती है, जैसे - "किस-किस से पूछोगे मेरा परिचय जग में? जब पग ही मेरा भटक गया अपने मग में?"[31] डॉक्टर भी इन मनोरुग्णों के इलाज के लिए प्रथम उनके साथ मित्रता का भाव पैदा करते हैं, दोस्ती का माहौल पैदा करते हैं। आधुनिक वातावरण में बीच-बीच में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग, डॉक्टर के दार्शनिक, सिद्धांतवादी विचार, संमोहन-प्रक्रिया, आदि का प्रयोग कर चित्रित किया है। साथ ही पुनर्जन्म के आधारपर ऐतिहासिकता को दर्शाने के लिए ऐतिहासिक नामों, तद्‌युगीन लोगों का रहन-सहन, प्रावर्णा के अपहरण का वातावरण जो मन में कुतूहल उत्पन्न करता है। ऐसे ही प्रावर्णा को गूफा में बंद कर, भयंकर कुत्तों के द्वारा उसकी पहरेदारी, साथ ही प्रावर्णा का सिर झुक जाना तथा नीलुख के आदेशानुसार भीतर चले जाना उसके नारीत्व के नष्ट होने का सूचक है। मंदार का आकाश की तरफ देखते

रह जाना उसके सूनेपन का सूचक है आदि बातों से तत्कालीन देश के मनुष्य जीवन, घटना, प्रसंगों का सूक्ष्मता से वर्णन किया है।

'कल्पना' उपन्यास भी आधुनिकता में ऐतिहासिकता का मिश्रण है। आधुनिक जीवन को व्यक्त करता हुआ लोगों का रहन-सहन, विचार, बोलचाल आदि दर्शाया है। साथ ही लेखक ने कहीं-कहीं मनुष्य के निराश भाव, अशुभ घटनाओं को सूचित करनेवाली व्याकुल मन की अवस्था आदि के साथ सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

साथ ही ऐतिहासिक प्रसंगों को चित्रित कर पाठक के आसपास ही ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिती करने का प्रयास किया है। प्रकृति चित्रण में माटी की सौंधी गंध, तितलियों का उड़ना, बेला के फूलों पर पीली कमर के भौरे का गूंजन साथ ही कल्पना की सहायता से प्रकृति सौंदर्य को बढ़ाया है। कहीं अतीत कालीन संगीत से वातावरण को सुमधुर बनाने का प्रयास किया है। युगानुरुप लोगों की वेशभूषा के साथ-साथ ऐतिहासिकता को प्रस्तुत करते हुए नाम कालिदास, राम, सीता आदि जो इतिहास की सत्यता को दर्शाते हैं, साथ ही कल्पना से उन्होंने उनके रहन-सहन को चित्रित किया है । तो कही शुभ सूचक वातावरण को निर्माण कर मनुष्य के आनंद को प्रकट किया है तो कहीं अशुभ सूचक के रुप में किसी प्रसंग को चित्रित करता है, जो यथार्थता को स्पष्ट करता है, विश्वसनीय लगता है।

राघव जी ने अपने उपन्यासों के कथानकों की रचना उसी युग के देशकाल वातावरण से निर्माण की है । उन्होंने देशकाल वातावरण से आधुनिक युग से संबंधित ऐतिहासिक युग की सत्यता को काल्पनिक प्रसंगों से सामने लाया है, जो अवर्णनीय है । तत्कालीन देशकाल-वातावरण के लिए उस युग के अंधविश्वासों, रीतियों, प्रकृतिचित्रण,नगरों-महानगरों आदि का परिचय दिया है, जिससे राघव जी की

सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि, चित्रण क्षमता की कुशलता, सतर्कता आदि का परिचय होता है, जो प्रभावात्मक है।

2.1.5 भाषा शैली :-

भाषा शैली के सहारे उपन्यासकार अपनी कृति को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार जिस ढंग से अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है, उसी को शैली कहते हैं। भाषा-शैली की सरलता, रोचकता, प्रवाहपूर्णता गुण माने जाते हैं। राघव जी ने अपने उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली, नाटकीय शैली, चरित्रात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है।

'राई और पर्वत' में ग्रामीण जीवन के वातावरण निर्मिती के लिए ग्रामीण बोली भाषा का प्रयोग किया है । चरित्रात्मक शैली के सहारे उपन्यास के सौंदर्य को बढ़ाया है। ग्रामीण जीवन को चित्रित करते हुए अशुद्ध शब्दों के प्रयोग के साथ कहीं-कहीं उर्दु तथा अंग्रेजी अशुद्ध शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। राघव जी ने ग्रामीण लोगों के वातावरण के लिए गालियों का भी प्रयोग किया है ।

कहीं-कहीं मुहावरों और कहावतों का प्रयोग हुआ है जैसे - बिजली कौंध जाना, नथुने झेपना, कुल की नाक कटाना, नाक सिकोड़ना, अप्रतिभ होना, आँखें लाल करना आदि तो सीप से मोती निकलना, चंदन से जहर पैदा होना, झूठ का फल पाप, डूबते को तिनके का सहारा, दाल में काला आदि कहावतों का प्रयोग प्रसंगानुकुल किया है तो कहीं व्यंग्यात्मक वाक्यप्रयोग हुए हैं।

राघव जी ने चरित्रात्मक शैली का प्रयोग कलात्मक ढंग से किया है, अपनी शैली से वे पात्रों के चरित्र के किसी-न-किसी पहलू को चित्रित करते हैं, जैसे

– "दरोगा का चिल्लाना, 'दे सूअर की बच्ची के रहपट। हरामजादी।'"[32] रामभरोसे के चरित्र को तो लेखक ने बहुत ही व्यंग्यात्मक ढंग से चित्रित किया है । जैसे रामभरोसे स्पष्ट करता है, "मुझे बुलाती थी। यह किसने कहा? कौन बुलाती थी? अजी हजूर। यही तो इस जिंदगी का शिकवा है कि किसीने, कसम नीली छतरीवाले की, आज तक नहीं बुलाया; गोया हम उनमें हैं ही नहीं, जो बुलाए जाते हैं! ऐसे-ऐसे हसीन मौजूद हैं जहां कि उल्टे तवे सरमा जाएं, उनके रहते हमें कौन पूछे? भगवान ने कलजुग में भैस को नखरे करने का वरदान दिया और गैया से छीन लिया।"[33] ऐसे ही भावुकता, विद्रोह को निराशता, घृणा, नास्तिकता को भी प्रदर्शित किया है ।

'पतझर' मनोविश्लेषणात्मक सामाजिक उपन्यास होने के कारण इसकी भाषा शैली दार्शनिक विचारों से भरी है, जो आधुनिक जीवन को दर्शाती है। जिसमें नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है। उपन्यास आधुनिक तथा मनोविश्लेषणात्मक होने के कारण कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है । साथ-ही-साथ शास्त्रीय या वैज्ञानिक बातों का परिचय हो जाता है आदि बातों से उपन्यास में रोचकता पैदा होती है।

राघव जी ने डॉ.सक्सेना के माध्यम से विविध विषयों में ज्ञान की अपनी रुचि को प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी भाषा शैली को पात्रानुकूल, समयानुकूल, दशानुकूल प्रस्तुत किया है, जैसे – मोहिनी की मानसिक विकृति गीतों के रुप में बोलने के सहारे प्रस्तुत की है, "मैं आई हूँ तुम्हारे द्वार।"[34] राघव जी ने अपने पात्रों के जरिए, वातावरण के सहारे ऐतिहासिक प्रसंगों को कलात्मकता से चित्रित किया है। पात्रों के नाम, संस्कृतनिष्ठ भाषा, संस्कृत शब्दों का प्रयोग, काव्यात्मक वातावरण आदि का सुंदर चित्रण किया है। इसके साथ-साथ प्रकृति का मानवीकरण

किया है, जैसे – "शारदी आती है जोत्स्ना का अंगराग लगाकर, हेमन्तिनी आती है अपने सुवासित वस्त्रों को धारण करके और शिशिरा आती है अपने आलिंगन की उष्मा लिए। वासंतिनी आती है अपने नयनों में विभोर घृणित लालिमा लिए आती है ग्रीष्मा अनथक प्यास लिए।"[35] जो नैसर्गिक ऋतुओं को नारियों के रुप में काव्यात्मकता को दर्शाते हैं। प्रकृति चित्रण से ऐतिहासिकता के वातारण को प्रस्तुत करते हुए पात्रों की भावनाओं की भी अभिव्यक्ति करते हैं, जिससे रोचकता, प्रवाहपूर्णता का दर्शन होता है।

'कल्पना' उपन्यास का कथानक भी आधुनिकता के साथ ऐतिहासिकता को प्रस्तुत करता है, जो आत्मकथात्मक शैली में लिखा हुआ है। उपन्यास में आरंभ से अंत तक लेखक का अस्तित्व रहने के कारण 'मैं' शैली के माध्यम से अपने ज्ञान की अभिव्यक्ति की है। उपन्यास आधुनिक प्रसंग, ऐतिहासिक प्रसंग साथ ही काल्पनिक प्रसंगों से भरा है। मानवी जीवन आधुनिक शहरी वातावरण से जुड़ा होने के कारण उर्दु, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे – कॉपी, ईंडियन्स, एण्टिटी, नैसेसिटी, ड्रेस, समथिंग, मिडिएवल आदि के साथ सतर्क रहकर उन्होंने पाठक की दृष्टि से अंग्रेजी शब्दों के अर्थ कोष्टक में दिए हैं ताकि पढ़ते समय रुकावट न आ जाए। साथ ही पात्रों के सहारे विविध विषयों की चर्चा कर सिद्धांतवादी, दार्शनिक, व्यावहारिक विचारों को प्रकट किया हैं, जो पाठक के ज्ञान में वृद्धि कराते हैं। अपनी भाषा-शैली के माध्यम से पात्रों को पाश्चात्य से प्रभावित दिखाया है जैसे – युरोप स्त्रियों का गहने न पहनना, धोती-कुर्ता का मध्ययुगीन लगना आदि।

ऐतिहासिक वातावरण की प्रस्तुति करने के लिए लेखक ने संस्कृत शब्द, संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग, काव्यात्मकता के साथ चित्रित किया है । राघव जी ने

अपने कथानक में आकर्षकता लाने के लिए भाषा शैली के माध्यम से उपमाओं का प्रयोग किया है जैसे - रंगबिरंगे भव्य द्‌वार के लिए 'इंद्रधनुष', खुले केशों के बीच के मुख को 'मलिन चन्द्रमा', सीता के पहने वल्कल को 'सुवर्ण', संपाति जटायु को 'महत्त्वाकांक्षी के पुतलों' राम को 'सूर्य', लक्ष्मण को 'दिन' और सीता को 'छाया' आदि उपमाओं के साथ पात्रों के कार्य, सौंदर्य, संबंधों को चित्रित किया है। साथ ही मुहावरों का प्रयोग हुआ है, जैसे - पुलकित हो जाना, तिलमिला जाना, बड़ी-बड़ी पलके उठाना, नीरवता छा जाना, फूट-फूट कर रोना आदि के साथ कहीं-कहीं प्रकृति के उदाहरण से मनुष्य की अवस्था का परिचय कराया है। तो कहीं-कहीं व्यंग्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग हुआ है जैसे - विदूषक बकुलावलिका को कहता है, "ऐसा लगता है, तुम्हारे भेजे में बुद्‌धि नाम की वस्तु है ही नहीं। क्यों कि मैं इतनी देर से कह रहा हूँ, परंतु अभी तक कुछ तुम्हारी समझ में नहीं बैठा। तो बकुलावलिका का कथन है, "चुप ही रहिए ब्राह्मण देवता आपकी तो लड्‌डुओं से प्रीती अच्छी रहती है।"[36]

राघव जी ने भाषा शैली के माध्यम से अपने उपन्यासों को प्रभावात्मक, रोचक, प्रवाहपूर्ण बनाया है, जो प्राचीन युग, मध्ययुग, आधुनिक युग को चित्रित करता है। राघव जी ने चरित्रात्मक, वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग कर पात्रों के मनोभावों के साथ ही चरित्र को चित्रित किया है, जिससे राघव जी की प्रतिभा, मौलिक चिंतन, अध्ययन, अनुभव ज्ञान, सूक्ष्मता, चित्रण क्षमता का परिचय हो जाता है।

2.1.6 उद्‌देश्य :-

उपन्यास विधा साहित्य क्षेत्र में एक सशक्त विधा मानी जाती है। उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार अपने विशिष्ट दृष्टिकोण का सहारा लेकर मानव

जीवन के विविध पहलुओं को अभिव्यक्त करता है व्यक्ति के विविध पहलुओं, विशेषताओं का गहराई से अध्ययन कर उसे समाज के सामने उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

राघव जी ने अपने उपन्यास इसी उद्देश्य से लिखे हैं। उन्होंने अपने उपन्यास में संदेश कहीं प्रत्यक्ष दिया है तो कहीं-कहीं जाने-अनजाने प्रकट होता है। उन्होंने सामाजिक तथा मानवी चित्रण के सहारे पुरुष और स्त्रियों के विचार, भावना, पारस्परिक संबंध कैसे हैं? तथा समाज की प्रवृत्तियाँ कैसी हैं? मनुष्य के प्रति समाज की दृष्टि, मनुष्य का विकास तथा -हास आदि से उत्पन्न मनुष्य की मानसिक विकृति आदि का अध्ययन, निरिक्षण कर अपने उपन्यासों की निर्मिती की हैं। इसी कारण उन्होंने कथानक पात्रों के चरित्रचित्रण के सहारे अपने विचार, सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने अपने उपन्यास केवल मनोरंजन की दृष्टि से नहीं लिखे हैं, तो उनमें मानवी जीवन तथा पीड़ा के विविध पहलुओं, समस्याओं को चित्रित किया है साथ ही उससे निर्मित दुष्परिणामों को दर्शित किया है। उन्होंने उपन्यास में चित्रित कुछ समस्याओं का हल भी प्रस्तुत किया है जैसे - विधवा समस्या के लिए पुनर्विवाह करना। उन्होंने अपनी कृतियों को यथार्थता से और सत्यता के साथ प्रस्तुत किया है, इसीकारण उनकी कृतियाँ सजीव, लगती है, जिससे मानव के वास्तविक जीवन का दर्शन हो जाता है। राघव जी ने अपने उपन्यासों के पात्रों की कमियों, कमजोरियों को स्पष्टता से चित्रित किया है, तो कहीं पात्रों को अपने व्यक्तित्व गुणों के कारण महान तथा आदर्श हैं। उपन्यास सामाजिक होने के कारण व्यक्ति-जीवन के साथ-साथ समाज जीवन, सामाजिक विषमता, समाज की कुरीतियाँ आदि को स्पष्टता से चित्रित किया है, जिनके प्रति पाठक के मन में कभी व्यथा, सहानुभूति, व्याकुलता तो कभी घृणा, नफरत, वितृष्णा निर्माण हो जाती है। उनके उपन्यास के विषय अधिकतर नारी जीवन और

समाज की कुरीतियों पर आधारित हैं। इसी कारण इन उपन्यासों को स्त्री प्रधान उपन्यास मानना चाहिए। उन्होंने 'पतझर', 'कल्पना' उपन्यासों में ऐतिहासिक जीवन से संबंधित आधुनिक जीवन का संबंध दिखाया है, जो एक-दूसरे से संबंधित है। जैसे - 'पतझर' की मोहिनी के पूर्वजन्म पर आधारित उसे युगों-युगों से अपने प्रेमी के लिए तड़पना पड़ा है, समाज के खातिर बिछड़ना पड़ा है। ऐसे ही 'कल्पना' की नीला का जीवन प्राचीन युग से विविध रुपों में अपने दांपत्य जीवन की विफलता को सहता आया है पुरुष तथा समाज के हाथ का खिलौना बनता आया है। ऐसे ही 'राई और पर्वत' की विद्या अपने सुसंस्कार तथा स्वाभिमान के कारण जीवन में आयी कठिनाइयों का सामना करती है, चाहे वह व्यक्तिगत हो, पारिवारिक अथवा सामाजिक। अतः विद्या, मोहिनी, नीला संपूर्ण नारी जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं।

राघव जी ने अपने पात्रों के जरिए समाज में स्थित ऐसे अन्य शोषित तथा पीड़ित नारियों को राह दिखाई हैं जैसे - 'राई और पर्वत' की विद्या समाज तथा घरवालों की कुटिलता को सहते-सहते अंत में रामभरोसे को अपनाकर स्वतंत्र होना चाहती है, मुक्त हो जाती है। 'पतझर' में डॉ.सक्सेना, दीनानाथ और हरबंसलाल की गलतफहमियाँ दूर करते हैं। तथा दो प्रेमियों को अपने कर्तव्य का एहसास दिलाकर उनका विवाह कर देते हैं। 'कल्पना' की नीला के सवाल का जवाब देते हैं कि, "न तुम संन्यासिनी बनो, ताकि यौवन जीवन से विरक्ति दिखाकर लोगों को प्रभावित कर सको। न तुम वेश्या बनो कि उसीके बल पर जिओ। प्रेम के नाम पर जो विवाह नाम की गुलामी तुमने इसीलिए मंजूर की थी कि घर बैठी मौज उड़ाओ। कुछ सम्मानित जीवन बिताओ। आजादी की भीख मत माँगो।"[37] अपना जीवन व्यस्त

बनाकर, अपने बलबुते पर अपना मार्ग तैयार करो। अपनी आजादी स्वयं हासिल करो। पुरुष तथा समाज के हाथ का खिलौना मत बनो।

राघव जी उद्देश्यों के सहारे नारी को नारीत्व का एहसास दिलाना चाहते हैं, नारियों के मन में दूषित समाज के प्रति विद्रोह निर्माण करना चाहते हैं, साथ ही सामाजिक विडंबनाओं, कुरीतियों को नष्ट करना चाहते हैं, जो मानव जीवन के लिए घातक है। इसी उद्देश्य के लिए राघव जी ने अपने उपन्यासों की कथा को ग्रामीण, शहरी वातावरण के, मानवी जीवन के आधार पर ऐतिहासिकता के साथ-साथ कुछ काल्पनिक प्रसंगो के सहारे प्रस्तुत किया है। ताकि ग्रामीण तथा शहरी जीवन की समस्या, अतीत कालीन युग की समस्या, मानवी जीवन के उतार-चढ़ाव आदि से समाज परिचित हो जाए, जिससे पाठक के मन में आत्मीयता, अनुभूति की विश्वसनीयता, आकर्षकता निर्माण होती है, जो मौलिक, प्रभावात्मक और सोद्देश्यपूर्ण है।

निष्कर्ष :-

उपन्यास समाज जीवन के साथ-साथ व्यक्ति जीवन का भी यथार्थ चित्रण करता है। उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार अपने विचारों को प्रकट करते हुए उपन्यास के उद्देश्यों अथवा संदेश को जाने-अनजाने रुप में प्रकट करता है। उपन्यास में लेखक जीवन का यथार्थ चित्रण उपस्थित करता है, जो उसके अपने अनुभवों पर आधारित होते हैं और अपने इन अनुभवों को वह यथार्थ के साथ विविध अंगों, तत्वों की सहायता से उपन्यास में चित्रित करते हैं। उपन्यास के तत्त्व-कथानक, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, संवाद तथा कथोपकथन, देशकाल-वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि की सहायता से सतर्कता के साथ अपने विचारों को उपन्यास के माध्यम से समाज तक पहुँचाया है।

राघव जी का 'राई और पर्वत' उपन्यास ग्रामीण जीवन को चित्रित करता है। 'पतझर' में मोहिनी और जगन्नाथ दो मनोरुग्णों के माध्यम से डॉ.सक्सेना के सहारे लेखक ने स्त्री-पुरुष के प्रेमसंबंध को युग-युगों से वंचित दिखाया है। जातिवाद, वर्णव्यवस्था के कारण आधुनिक पीढ़ी का मनोरुग्ण बन जाना, कुंठित बन जाना, आदि से समाज पर गहरा प्रहार किया है। परंतु अंत में दोनों के विवाह से जातिभेद की शृंखला को तोड़कर एकात्मकता का मार्ग दिखाया है।

'कल्पना' उपन्यास में आधुनिक जीवन के साथ ऐतिहासिकता में कल्पना के सहारे जीवन के विफल होते आए दांपत्य जीवन, स्त्री-पुरुष संबंध, स्त्री-अधिकार साथ ही प्रेम और विवाह से संबंधित समस्या को चित्रित किया है। प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक युगों के मानवी मूल्यों का मूल्यांकन कर लेखक ने स्त्री की विवशता को नष्ट करने का प्रयास किया है। उसे स्वतंत्रता की सलाह दी है, मुक्त होने के लिए प्रेरित किया है ताकि पुरुष की गुलाम न बनकर स्वयं जीवन मार्ग तैयार करे और बिना किसी के सहारे उस पर चल सके।

इन कथाओं के माध्यम से लेखक ने कथानक को सारी विशेषताओं से परिपूर्ण बनाया है, जो कथानक रोचक, प्रभावात्मक, मौलिक संबंधित है जिसे राघव जी ने अपनी निर्माण कौशल से बनाया है, जो सत्य लगते हैं और मानव जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत कर उसका प्रतिनिधित्व करता है, जीवन की विविध अवस्थाओं को प्रस्तुत करता है, इन सब के चित्रण से अनुभवों की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।

राघव जी ने पात्र तथा चरित्र-चित्रण भी कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किए हैं। कल्पना और सत्य के आधार पात्रों के अंतर्गत विविध पहलुओं को प्रकट किया है, जो वास्तविकता से संबंधित है। राघव जी ने अपने उपन्यास के पात्र चाहे वह

ग्रामीण हो या शहरी, अतीत कालीन हो या काल्पनिक उन्हें समयानुकूल प्रभावात्मक अपने कथानक से संबंधित ही चित्रित किया है, जो स्वाभाविक लगते हैं। पात्रों के चरित्र से परिस्थिति के अनुसार उनके मन में स्थित आशा-आकांक्षा, प्रेम, सहृदयता, भावुकता आदि के साथ ही द्वेष, मत्सर, घृणा, विद्रोह, सुख-दुख, आदि गुणों का स्पष्ट परिचय हो जाता है, जिससे पात्रों की वास्तविक स्थिती का पता चलता है, जो स्वाभाविक है अतः राघव जी ने अपने पात्र यथानुकूल परिस्थितिनुकूल चित्रित किए हैं, जो विश्वसनीय लगते हैं।

संवाद तथा कथोपकथन से प्रसंग एवं घटना के साथ-साथ पात्रों के चरित्र, उनके जीवन के सुख-दुःखों का चित्रण हो जाता है। राघव जी ने अपने कथानक में उचित एवं अनुरुप संवादों से कथानक तथा पात्रों, प्रसंगों में जान भर दी है, जो कथानक के विकास के साथ-साथ पात्रों के चरित्र तथा जीवन की व्याख्या करते हैं। संवाद कथानक में सजीवता लाने का प्रयास करते है, जिससे कथानक रोचक बन जाता है। उपन्यासों के पात्र संवाद - कथोपकथन से अपने आपको सुखी तो कभी दुखी लगते हैं। राघव जी ने अपने संवादों और कथोपकथन को परिस्थिति के अनुसार पात्रों से संबंधित, उद्देश्यपूर्ण कहीं संक्षिप्त तो कहीं दीर्घ किंतु सरलता, स्पष्टता से प्रस्तुत किए है, जो अनुकूल और स्वाभाविक लगते हैं।

उपन्यास में आयी परिस्थिति, प्रसंग, घटना विविध पात्र उनके कार्य, पात्रों का जीवन आदि का परिचय देशकाल-वातावरण से स्पष्ट हो जाता है। राघव जी ने अपने उपन्यास की कथा के अनुसार देशकाल-वातावरण का निर्माण किया है, जिससे इन उपन्यासों में चित्रित समाज परिस्थितियाँ, पात्र, उनका रहन-सहन का पता चलता है जैसे 'राई और पर्वत' एक ग्रामकथा पर आधारित है। इस उपन्यास में गाँव

का वर्णन, भाषा-शैली, रीति-रिवाज आदि से ग्रामीण जीवन स्पष्ट होता है। 'पतझर', 'कल्पना' आदि उपन्यास आधुनिक शहरी वातावरण के साथ-साथ उदाहरण रुप में चित्रित ऐतिहासिकता को प्रस्तुत करते हैं। इतिहासकालीन व्यक्तियों के नाम, उनकी भाषा तथा विचार से ऐतिहासिकता का बोध हो जाता है। प्राकृतिक चित्रण के सहारे मानवी भावनाओं को व्यक्त करना जैसे - 'रात्री के सूनेपन से निराशता को व्यक्त करना, संपाति, जटायु, दोनों गिद्ध के उदाहरण से मनुष्य के टूटते अहंकार का चित्रण, देहलीज पर फूल चढ़ाकर अपने जीवन के दिन गिनने से जीवन का सुनापन निराशता, अकेलेपन को स्पष्ट करता है आदि बातों को प्रसंगानुकूल सतर्कता के साथ व्यक्त करने के कारण घटना तथा प्रसंगों के प्रति रोचकता निर्माण हो जाती है, जिससे राघव जी के सूक्ष्म निरीक्षण और मौलिक चित्रण क्षमता का परिचय हो जाता हैं ।

भाषा-शैली के कारण उपन्यासकार के विचार तथा पात्रों के आचार-विचार सामाजिक परिस्थितियों आदि का स्पष्टीकरण हो जाता है। राघव जी ने अपने उपन्यासों में भाषा-शैली पात्रानुकूल, परिस्थितिनुसार, दशानुकूल प्रस्तुत करके कथानक के प्रति पाठकों को आकर्षित किया है। इसके साथ-साथ संस्कृतनिष्ठ काव्यात्मक भाषा, चरित्रात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली तथा नाटकीय शैली का भी प्रयोग किया है। जिसके कारण रोचकता, आकर्षकता उत्पन्न होती है, जो प्रभावात्मक लगती है।

उद्देश्य की दृष्टि से तीनों उपन्यास उद्देश्यपूर्ण हैं, इनमें राघव जी ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संदेश दिया है, जो मानवी जीवन का चित्र तथा समाज-जीवन की कठोरता का परिचय देता है। राघव जी ने मनुष्य जीवन के साथ समाज का सूक्ष्म निरीक्षण और अध्ययन कर उपन्यास के माध्यम से उसे प्रस्तुत किया है। बाल विवाह,

विधवा समस्या, अनमेल विवाह इसके साथ जुड़ी हुई समाज की विषमता का चित्रण कर उनको नष्ट करेने का संदेश दिया है। 'पतझर' में चित्रित प्रेम, यौन, अन्तर्जातीय विवाह, जातिवाद समस्याओं को नष्ट करने का प्रयास किया है, जिससे उत्पन्न मानवतावाद और एकात्मकता की ओर निर्देश किया है। साथ ही 'कल्पना' में समाज की कुरीतियों पर प्रहार कर शोषित, पीड़ित नारियों को स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने, पुरुष और समाज की गुलामी छोड़ने, परिवार और समाज में अपना अलग स्थान निर्माण करने का संदेश दिया है, नारी के नारीत्व पर आलसी, कामचोर, पराये श्रम पर पलनेवाली, कमा-कमाए धन पर आश्रित रहनेवाली आदि इल्जाम लगाकर उसको उकसाया है, जिससे वह अपने अस्तित्व के प्रति जागृत हो जाए। साथ ही पुरुष और नारी में समानता निर्माण होने से समाज में ऐक्य प्रस्थापित हो, जिससे समाज का विकास संभव है।

अतः राघव जी ने अपने उपन्यासों को बड़े मार्मिक तथा कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है, जो औपन्यासिक तत्वों की विशेषता, गुणों से परिपूर्ण हैं, मनुष्य जीवन के साथ-साथ समाज दशा में भी प्रगति ला सकते हैं। मनुष्य जीवन, समस्या, संघर्ष के साथ-साथ समाज जीवन, सामाजिक कुरितियों को प्रस्तुत करने, उनके विनाश करने को प्रेरित करते हैं। अतः रांगेय राघव जी के आलोच्य उपन्यास औपन्यासिक तत्वों की दृष्टि से सफल हैं।

: संदर्भ सूची :

(1) सम्पा. अमरनाथ, रांगेय राघव - साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.32

(2) डॉ.(श्रीमती) उमा त्रिपाठी - रांगेय राघव का कथा-साहित्य, पृ.274,275

(3) डॉ.प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास-उद्भव और विकास, पृ.23

(4) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.78,79

(5) वही, पृ.87

(6) वही, पृ.138

(7) वही, पतझर, पृ.51

(8) वही, पृ.26

(9) वही, पृ.62

(10) वही, कल्पना, पृ.66

(11) वही, पृ.33

(12) सम्पा.अमरनाथ, रांगेय राघव - साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.28,29

(13) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.105

(14) वही, पृ.31

(15) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.35

(16) वही, पतझर, पृ.79,80

(17) वही, राई और पर्वत, पृ.55

(18) वही, पृ.119,120

(19) वही, पतझर, पृ.61

(20) वही, पृ.61

(21) वही, कल्पना, पृ.6

(22) वही, पृ.28

(23) वही, पतझर, पृ.10,11

(24) वही, कल्पना, पृ.107

(25) **वही, राई और पर्वत, पृ.26**

(26) वही, पृ.37

(27) वही, पृ.9

(28) वही, पृ.5

(29) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.38

(30) वही, पतझर, पृ.6

(31) वही, पतझर, पृ.37

(32) वही, राई और पर्वत पृ.13

(33) वही, पृ.31

(34) वही, पतझर, पृ.36

(35) वही, पृ.67

(36) वही,कल्पना, पृ.89

(37) वही, पृ.112,113

****